ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 14 अंक 2 अक्तूबर 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शबद-गुरु का सिक्ख-मॉडल 7
-डॉ. बलकार सिंघ
आधुनिक संदर्भ में गुरुद्वारा साहिब का महत्व... 16
-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर
गुरू मानिओ ग्रंथ 23
-डॉ. जगजीत सिंघ
पूर्ण गुरसिक्ख की अवधारणा के प्रकट रूप : बाबा बुड्ढा जी 27
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
वीर शिरोमणि बाबा बंदा सिंघ बहादुर 32
-डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)
...भाई तारू सिंघ जी शहीद 37
-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा
महाराजा रणजीत सिंघ का दरबार-ए-खालसा अर्थात् खालसा दरबार 39
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
लालटेन और आरसी 41
-डॉ. जसवंत सिंघ नेकी (दिवंगत)
सिध गोसटि : विचार व्याख्या 42
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभु राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥ *(पन्ना १३५)*

बाणी के बोहिथ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में कार्तिक मास की सुहावनी बहार के संग में मनुष्य-मात्र को मनुष्य-जन्म का अमूल्य अवसर सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यदि जीवन की कार्तिक मास की सुहावनी ऋतु में परमात्मा के मिलाप हेतु जीव कर्म करने से अथवा नाम-सिमरन से वंचित रह गया तो इसमें किसी का क्या दोष है? यह दोष उस जीव पर ही लागू होना चाहिए जो प्रायः अनुकूल परिस्थितियां होने के बावजूद भी प्रभु-नाम जपने की दिशा में गतिशील नहीं होता। सतिगुरु जी स्पष्ट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जीव परमात्मा को भूल जाता है और परमात्मा के भूल जाने से ही जीव को सभी प्रकार के अर्थात् शारीरिक और मानसिक रोग लग जाते हैं। प्रभु से मुंह मोड़ लेने से जन्म-वियोग अथवा अत्यंत लंबा बिछोड़ा मिलता है। प्रभु-नाम को भूल कर जीव माया के भोग भोगता है जो कि प्रभु भूल जाने पर यकदम कड़वे लगने लग जाते हैं। जीव की ऐसी दुखदायक स्थिति किसी बाहरी प्रयास से बदल नहीं सकती। वह किसके पास प्रतिदिन अपना दुख व्यक्त करे? मात्र बाहरी प्रयास फलदायक नहीं होते और प्रभु मालिक ही जीव के उद्धार का संयोग बनाता है। अच्छे भाग्य हों, तभी मालिक से मिलाप होता है, जिससे जन्मों का वियोग भी दूर हो जाता हैं। सतिगुरु प्रभु से विनती करते हैं कि हे बंधनों से मुक्त करने वाले मालिक! मुझको इस भौतिक संसार की माया के प्रभाव से बचा लेना। यदि कार्तिक की सुहावनी ऋतु में अच्छे मनुष्यों का साथ मिल जाए तो प्रभु से जुदा रखने वाली सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं।

संपादकीय

गुरु-घर के अद्वितीय सिक्ख सेवक : बाबा बुड्ढा जी

गुरु एवं सिक्ख का आपसी सम्बंध बहुत गहरा है। अकाल पुरख की ज्योति हर इंसान में विद्यमान है गुरु इंसान की आध्यात्मिक संवेदना को अपने दैवी स्पर्श से प्रकट कर इंसान का इस संसार में विचरते हुए परमात्मा से मिलाप करवाता है। गुरु और शिष्य, मुरशिद एवं मुरीद आदि योग-धारणायें बेशक विश्व के विभिन्न मतों में भी मिलती हैं परंतु गुरु तथा सिक्ख का जो सच्चा-सुच्चा एवं गहरा परस्पर सम्बंध सिक्ख धर्म में है वह अपना उदाहरण स्वयं है। इस सम्बंध को सिक्ख इतिहास में हुए महान सिक्खों ने गहरा एवं सर्वदा बनाने हेतु खास योगदान डाला है। ऐसे सिक्खों में बाबा बुड्ढा जी का नाम सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों से अंकित है।

बाबा बुड्ढा जी बाल्यावस्था से ही गुरु-घर की सेवा को ऐसे समर्पित हुए कि अपना समस्त जीवन सेवा के लेखे लगा गये। आप जी श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन-दीदार करने के पश्चात् गुरु-घर के साथ इस प्रकार जुड़े कि फिर कभी जुदा न हुए। बाबा बुड्ढा जी में गुरु से बिछड़ी सिक्ख संगत को गुरु से मिलाप कराने के लिए एक कड़ी का कार्य करते रहे। ''बुड्ढिआ! तैथों ओहले न होसां'' का गुरु-फरमान सदैव व्याप्त रहा। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु साहिबान तथा सिक्ख संगत की सेवा में जो सेवायें हाज़िर कीं वे दुर्लभ तथा बेमिसाल हैं।

बाबा बुड्ढा जी का जीवन समूह सिक्ख संगत के लिए गुरु-घर की निष्काम सेवा से जुड़े रहने के लिए सदैवकालीन प्रेरणा-स्रोत है। बाबा जी ने सम्पन्न घराने में जन्म लेकर अपने आप को सदा ही अदना-सा सिक्ख सेवक समझा। कभी भी जमीन, जायदाद, धन-दौलत का रंचक-मात्र अहंकार अपने पास फटकने नहीं दिया। 'बूड़ा' नामक बालक गुरु नानक पातशाह के दर्शन-दीदार करते समय, गुरु जी से भेंट-वार्ता के समय जो बातें करता है, गुरु जी उन बातों को सुनकर, प्रसन्न होकर उस बाल को 'बुड्ढा' का सम्मानजनक रुतबा प्रदान करते हैं। गुरु नानक पातशाह द्वारा कृपा के घर में आकर प्रदत्त यह रुतबा उसी रोज़ से आपको हासिल है। यह रुतबा युगो-युग अटल है।

बाबा जी की यह इच्छा थी कि सारी जिंदगी इस रूप में ही गुरु-घर की सेवा को

समर्पित रहा जाए और गृहस्थ धर्म न अपनाया जाये, लेकिन गुरु-हुक्म अथवा गुरमत जीवन-युक्ति का सम्मान करते हुए, उसको सर-आंखों पर लेते हुए आप गृहस्थ धर्म के धारक बने। आप जी का समूचा परिवार ही गुरु-घर को समर्पित हुआ। पारिवारिक फर्जों और गुरु-घर की सेवा की बाबा बुड्ढा जी द्वारा प्रस्तुत उदाहरण मानवता के लिए प्रकाश-स्तंभ है।

बाबा बुड्ढा जी को अमृत सर (सरोवर), श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण की सेवा अपने हाथों से करने तथा सिक्ख संगत से करवाने का गौरव हासिल है। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की परिक्रमा में स्थित बेर बाबा बुड्ढा जी इस परम पावन केंद्रीय गुरुधाम की करवाई गई तथा की गई सेवा की निशानी के तौर पर आज भी मौजूद है। श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश के शुभ अवसर पर बाबा बुड्ढा जी के शीश पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन (आदि) स्वरूप को सुशोभित किया गया, जिस पर पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने कर-कमलों से चंवर किया। बाबा बुड्ढा जी को पावन स्वरूप का पवित्र पाठ संगत को श्रवण करवाने की महान सेवा श्री हरिमंदर साहिब के सर्वप्रथम ग्रंथी होने के रूप में हासिल हुई।

बाबा बुड्ढा जी ऐसे सौभाग्यशाली गुरसिक्ख हैं जिन्हें छः गुरु साहिबान के अपनी आंखों से प्रत्यक्ष दर्शन-दीदार करने, निजी सेवक के रूप में अंग-संग विचरने, वचन श्रवण करने तथा गुरु-हुक्म को कमाने का सौभाग्य हासिल हुआ। बाबा जी को श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को गुरुआई पर विराजमान करने की रस्म को निभाने का गौरव भी प्राप्त हुआ। गुरु-इतिहास या सिक्ख इतिहास में यह दुर्लभ गौरव मात्र बाबा बुड्ढा जी को ही प्राप्त है। बाबा जी ने प्रिथी चंद द्वारा गुरु-घर को पहुंचाई जा रही क्षति को एक मज़बूत दुर्ग की भांति डटकर रोका तथा सिक्ख संगत को गुरु और गुरबाणी की मूल धारा से जोड़े रखा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की समूची सिखलाई की सेवा आप जी को ही मिली। बाबा जी ने अपनी अंतिम सांस भी गुरु-गोद में ही ली।

बाबा बुड्ढा जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए हमें उनके द्वारा बताये गए पथ पर चलने एवं निष्काम सेवा करने का प्रण लेना चाहिए।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शबद-गुरु का सिक्ख-मॉडल

-डॉ. बलकार सिंघ*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन-मूलक ग्रंथ नहीं है, यह धर्म-मूलक ग्रंथ है। धर्म-मूलक ग्रंथ में दर्शन शामिल रहता है, लेकिन दर्शन मूलक ग्रंथ में ज़रूरी नहीं है कि धर्म शामिल हो। इसका आधार शबद-गुरु का सिक्ख-मॉडल है और यहां इस बारे में ही बात की जा रही है।

शबद-संस्था का सिक्ख-स्रोत और सिक्ख-आधार श्री गुरु ग्रंथ साहिब है। इस हवाले से शबद-संस्था का समय बाबा फ़रीद जी से लेकर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब तक बन जाता है। शबद के सिक्ख-मॉडल का समय श्री गुरु नानक देव जी से आरंभ होने के कारण २९६ साल पीछे चला जाता है। अत: स्पष्ट हुआ कि श्री गुरु नानक देव जी की आमद (समय) तक शबद का कोई ऐसा निश्चित मॉडल कायम नहीं था, जिसकी निरंतरता में शबद के सिक्ख-मॉडल के बारे में चर्चा की जा सके। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से बाहर हिंदू धर्म-चिंतन में और सामी धर्म-चिंतन में शबद को महत्वपूर्ण स्थान अवश्य प्राप्त था, परंतु शबद का प्रकटावा अवतारीकरण रूप में ही प्राप्त था। गुरु साहिब से पहले हुए और शबद-गुरु का हिस्सा हो गए भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब से बाहर भी मिलती है। उसमें लेखक और लिखित अलग-अलग हैं, क्योंकि लिखित से लेखक को अलग कर दिया गया है। यह व्यक्ति का दैवीकरण है और धर्म-चिंतन में डेरेदारी का सूचक है। सिक्ख चिंतन में बाणी को लिखित रूप में स्वीकार कर, ज्योति की बात की गई है, परंतु अगर कच्ची बाणी की कोटि में है तो लिखत के लेखक का मूर्तिकरण हो जाना आसान हो जाता है। वास्तव में सिद्धांत का संस्थाकरण अगर डेरेदारी तक सीमित हो जाये तो पतनोन्मुखी रुझान या विलयकरण (लुप्त होने) की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। भक्त साहिबान को सतिगुरु साबित करने के लालच में डेरेदार वारिसों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल उन संतों-भक्तों को भी उस ऋषि-परंपरा की तरफ चला लिया है, जिससे टूटे हुए लोगों को श्री गुरु नानक देव जी ने शबद-गुरु के मॉडल का हिस्सा बना लिया था। इससे भक्त साहिबान के पैरोकारों की विरासत ने पतनोन्मुखी सोच के अधीन भक्त साहिबान का मूर्तिकरण कर लिया है और लिखित के पूजाकरण के द्वारा पुजारीकरण का रास्ता आसान कर लिया है। इस प्रवृत्ति को सिक्ख धर्म चिंतन में भी ठूसने की भद्दी कोशिशें सिक्ख-विरोधी ताकतें करती आ रही हैं। जो कोशिशें हो रही हैं, उनको अभी तक वो सफलता हासिल नहीं हुई, जिसकी गुरमति-विरोधियों को आशा थी।

*३४, अर्बन अस्टेट, फेज-१, पटियाला - १४७००२, फोन : ९३१६३-०१३२८

बाणी में शबद के बहुत-से रंग प्राप्त होते हैं। ये रंग शब्द-जोड़ों की भिन्नताओं के कारण भी हैं और शबद के प्रासंगिक रंग भी हैं। शबद-जोड़ों के रूप में सबद, शबद, सबदं, सबदरतं, सबदि, सबदी, सबदु, सबदे, सबदै, सबदो और सबदौ हैं। इनमें शबद के शब्द-जोड़ों में 'स' और 'श' का अंतर भी मौजूद है। गुरबाणी व्याकरण के हिसाब से तथा अन्य प्रकटावे की परतों के कारण यह अपने आप में स्वतंत्र अध्ययन का विषय बन जाता है। कारण यह है कि एक ही मूल से प्रकाशमान हुई शबद की परतों के प्रासंगिक रंगों के उत्साह से न्याय स्वतंत्र अध्ययन द्वारा ही हो सकता है। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' के पृष्ठ १५६ पर बताया है कि शबद संज्ञा रूप में धुनि, आवाज़ और सुर के अर्थों में आया है। पद के अर्थों में आने के अलावा गुफ़्तगू के अर्थों में भी आया है :

सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥
विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥
(पन्ना ४२९)

गुरु-उपदेश के अर्थों में भी शबद आया है:

भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥
नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ
दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥ *(पन्ना ११२५)*

शबद को ब्रह्म अथवा परमात्मा के अर्थों में भी इस्तेमाल किया हुआ है :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ *(पन्ना ९४३)*

शबद को धर्म अथवा मज़हब के लिए भी इस्तेमाल किया हुआ है :

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
(पन्ना १३५३)

इसी तरह संदेश या पैग़ाम के लिए भी शबद का इस्तेमाल हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के छंद रूप वाक्य को 'शबद' कहते हैं। शबद छंद की ख़ास जाति नहीं, अनेक छंदों का रूप शबदों में देखा जाता है। जब शबद विशेषण हो तो यह शबद का वाच्य अर्थ, शबद का मकसद हो जाता है :

न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ (पन्ना ६६५)

इस तरह शबद के अर्थ करतार का हुक्म, धर्म, गुरु-मंत्र और गुरबाणी भी प्राप्त हैं। श्री गुरु अंगद देव जी शबद की आंतरिक परतों को जिज्ञासु के लिए इस तरह परोसते हैं :

सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥
बिनु सबदै सभु जगु बउराना
बिरथा जनमु गवाइआ ॥
अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥
(पन्ना ६४४)

फिर शबद की प्राप्त दो परतें वर्णात्मक और धुनात्मक के साथ शबद को व्यक्तिगत उत्तमता के लिए इस्तेमाल कर लेने की संभावनाएं पैदा हो गईं। इसका लाभ गुरु-विरोधियों, गुरु-शारीकों और गुरु-निंदकों ने उठाने की कोशिश करते हुए अपनी लिखित (कच्ची बाणी) को सच्ची बाणी घोषित किया था, परंतु गुरु ने कच्ची बाणी और सच्ची बाणी में अतंर करने के विवेक के लिए सैद्धांतिक युक्ति मुहैया करा दी थी। जब

मानसिकता में माया व्याप्त हो जाये तो लिखित (कच्ची बाणी) लिखारी की हदों के अंदर ही रह जाती है। इसी में से लिखित के बाणी प्रसंग को जागती-ज्योति और जाहिरा-जहूर रूप में श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में १६०४ ई. में प्रकट कर दिया था। पहली बार किसी पवित्रता या आध्यात्मिकता के क्षेत्र में लिखित पवित्र बाणी को गुरु साहिबान ने स्वयं स्थापित कर पैरोकारों की तरफ से उत्तमता के आधार पर धर्म-ग्रंथ स्थापित करने की ज़रूरत को खत्म कर दिया था। आज शबद-गुरु के सिक्ख-मॉडल से अनजान अकादमिक विशेषज्ञों की तरफ से उत्तम-मॉडल की प्राप्त आलोचनात्मक विधि अनावश्यक बौद्धिक कलाबाज़ी में उलझी हुई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब, शबद-गुरु का ऐसा शबद-मॉडल स्थापित हो गया है, जिसे धर्म का वर्तमान स्थापित करने का दावेदार कहा जा सकता है वह विलक्षण भी है और स्वतंत्र भी। पांच सदियों (११७३-१६७५ ई.) के बाणीकारों को एक चिंतन-मॉडल में ढालने के लिए बाणीकार को ज्योति रूप में बाणी में निहित स्वीकार कर लिया गया है। बाणी को बाणीकार, बाणी और श्रद्धालु के मध्य विभाजित कर देखने की इसलिए ज़रूरत नहीं है क्योंकि बाणीकार को ज्योति के रूप में और बाणी को युक्ति के रूप में एक-दूसरे की पूरकता में स्वीकार कर शबद-मॉडल में ढाल दिया है। यहां बाणीकार की नहीं श्रोता की (सुणिऐ) और समर्पित मानसिकता (मंनै) की ज़रूरत है। इस पावन बाणी को 'खसम की बाणी' तो माना है, परंतु बाणीकार को देवता, ऋषि, ईश्वर का पुत्र या आखिरी पैग़ंबर न मान कर शबद को नश्वरता से मुक्त कर दिया है। इसी को शबद-गुरु के रूप में लिया जा रहा है। इस अचूक शब्द-मॉडल का आधार भाई कान्ह सिंघ नाभा के शब्दों में कहना हो तो कहा जा सकता है कि धर्म के नाम पर प्राप्त गोरख धंधा इसलिए पैदा होता रहा है, क्योंकि उसमें नियम के विरुद्ध, इतिहास के विरुद्ध और दलील के विरुद्ध सरोकारों को पवित्र तथा इलहामी हुक्म मानने की मज़बूरी का सामना करना पड़ता रहा है। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शबद-गुरु में निहित राज (ज्योति) को करनी (युक्ति) के रूप में प्रकट करते हुए जो शहीदी मार्ग स्थापित किया था, उसकी ऐतिहासिकता सिक्ख अरदास में तत्व रूप में आ गई है। यह शबद-गुरु की रहनुमाई में स्थापित हुई सिक्ख मानसिकता ही है, जिसे *''सिर जाए तां जाए पर सिक्खी सिदक न जाए''* जैसी लोकयानक मान्यता प्राप्त है।

शबद-गुरु सिक्ख का मार्ग भी है और मंजिल भी। अगर कोई चला ही नहीं तो उसने पहुंचना कहां है? जो चला है, परंतु पहुंचा नहीं, वह पहले से आगे है। दोनों की असफलता के लिए मंजिल को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। इससे यह साबित हो गया है कि निश्चित परिणामों के साथ जुड़ा हुआ विश्वास मंजिल को वैसे ही समझता है, जैसे परमात्मा को सातवें आसमान या स्वर्ग में समझने की धार्मिक परंपरा कायम है। मंजिल का सिक्ख प्रसंग दरिया की भांति बहते रहने के साथ

जुड़ा हुआ है और इसे समुद्र में समा जाने के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। यह प्रसंग सिक्ख धर्म-चिंतन ने स्थापित कर आध्यात्मिक इतिहास में प्राप्त संतुष्टि-मॉडल को तड़प-मॉडल में बदल दिया था। भाई वीर सिंघ ने इस सुर को ''नेहुं वाले नैणां की नींदर, उह दिने रात पए वहिंदे'' के माध्यम से प्रकट किया हुआ है। इसी लिए सिक्ख धर्म-चिंतन या शबद-मॉडल को संतुष्टि-मॉडल की जगह तड़प-मॉडल कहा जा रहा है। इसी में से सिक्ख धर्म को संपूर्ण जीवन जीने का धर्म कहा जा सकता है।

संतुष्टि-मॉडल में से धार्मिक दलाली (डेरेदारी) पैदा होती रही है, क्योंकि यह संभावना इस हालत में कायम रहती है। यह वृत्ति धार्मिक अवरोध पैदा करती है और धर्म को धंधा बन जाने का रास्ता साफ करती है। धंधे में नैतिक सरोकारों की ताज़गी कायम नहीं रखी जा सकती। यह अमल का सिद्धांत है और इसमें प्रसार संभव है, क्योंकि इसमें मन को माया के साथ बह जाने की आज्ञा है। इस हालत में धर्मियों में से धर्म पंख लगा कर उड़ जाता है। 'आसा की वार' में इसका प्रसंग स्थापित हो गया है। इसे सिक्ख मुहावरे में आत्मपूरक संतुष्टि कहा जा सकता है। इसमें अंदर से सिक्ख होने की तड़प धीमी होती-होती ख़त्म भी हो सकती है। धर्म की ऐसी मौत संतुष्टि-मॉडल में संभव रहती है, इसी लिए शबद-मॉडल विषम है और तड़प इसका हिस्सा है। पंथक सृजना इसी धरातल पर की गई थी और इसकी प्रासंगिकता इससे हट कर कायम नहीं रखी जा सकती।

सिक्ख शबद-मॉडल के लिए ग्लोबलीकरण ने चुनौतियां अवश्य पैदा कर दी हैं। ग्लोबलीकरण के साथ टैक्स्ट की बजाय सिद्धांत को प्राथमिकता प्राप्त हो गई है। इसके साथ धरातल की बजाय निर्माण को प्राथमिकता प्राप्त हो गई है। अब तो निर्माण पर पुनर्निर्माण को मान्यता प्राप्त हो गई है। यह पैरों की तरफ देख कर न चलने की तरह है। हवा के घोड़े पर सवार होने की लालसा में पूरबी लोग पश्चिमी लोगों से भी अधिक पश्चिमी होने की कोशिश कर रहे हैं। इससे जड़ के बिना वृक्ष की कल्पना की जाने लगी है। यह बबूल बोकर अंगूरों की झूठी आकांक्षा है। सबसे पहले इसका परिणाम यह हुआ है कि सिक्ख संस्कृति का पश्चिमीकरण होने लगा है। इसका शिकार पारंपरिक सरोकारों को होना पड़ रहा है। मन की मौज को मनमुखता के रूप में देखने की जगह बेलगाम आज़ादी के रूप में लिया जा रहा है। परंपरा को फ़ालतू भार और अनावश्यक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि *'बाबाणीआ कहाणीआ'* मन की लगाम हैं। चंचल आधुनिकता ने परंपरा को भूत काल की ग़ुलामी और वर्तमान के साथ गद्दारी समझ लिया है। इससे शबद के सिक्ख-मॉडल में *''बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि''* वाले प्राप्त प्रसंग के लिए चुनौती पैदा हो गई है। जिन आपेक्षित आकांक्षाओं की मानव-मानसिकता में बाढ़ आ गई है उनकी जड़ें आधुनिकता में हैं। पश्चिम इसको रद्द कर चुका है और 'रैग' की तरह

सिक्खों ने इसे शौक जैसी मजबूरी में पहन लिया है। मानव-मानसिकता को बोरियत, उदासी और पिछड़ेपन में से पैदा होने वाली असफलताओं ने घेर लिया है। इसमें से मुक्त होने के लिए प्राप्त धरातल की जगह मांगे गए सिद्धांतीकरण को ग्रहण करने में चेतन वर्ग आगे लग गया है और यह घटनाक्रम भारत की आज़ादी (१९४७ ई.) के बाद ज्यादा प्रबल रूप में सामने आया है। परिणामस्वरूप बहुभाषी पहुंच, सांस्कृतिक अनेकता और अन्य ग्लोबली प्रभावों ने सिक्ख सरोकारों पर बहुत प्रभाव डाला है। ज्यादतियां रोकने के लालच में नई किस्म की ज्यादतियां पैदा हो गई हैं। नैतिकता को ललकारा गया है। सघन जनसंख्या में उजाड़ता प्रवेश करती जा रही है। प्रश्न यह पैदा हो गया है कि उल्लू बनना है या उल्लू बनाना है? दोनों हालात नुकसानदेय हैं। ऐसी बातों ने पश्चिम को पहले ही हिलाया हुआ है। पश्चिम तो फिर धर्म की पहचान की तरफ मुड़ रहा है, परन्तु भारत के धर्म-निष्पक्ष राजनीतिक पैंतरों ने पूरब को पश्चिम का नेतृत्व करने के लायक ही नहीं छोड़ा। लगने यह लगा है कि पश्चिम नेतृत्व लेने के लिए नहीं, नेतृत्व करने के लिए आ रहा है। यह सब मंडीकरण के कारण हुआ है। पहले हमारे कच्चे माल का मंडीकरण होता था और अब हमारे सिद्धांतों एवं संस्कृति का भी मंडीकरण हो रहा है। इससे क्षेत्रीय भाषाओं की आनंदमयी होने लगी है। इस हालत में शबद के सिक्ख-मॉडल की भूमिका अहम हो जाती है। शबद-मॉडल में विश्व-धर्म को धरातल बनने की संभावनाएं कायम हैं, क्योंकि शब्द-मॉडल में ग्लोबलीकरण के साथ निभ सकने की संभावनाएं पहले से ही कायम हैं। उदाहरण के रूप में स्थापित या एकाधिकार के विरुद्ध सर्वप्रवानित ग्लोबली सिद्धांत हो गया है। विकेंद्रीकरण को ग्लोबली प्रसंग में मान्यता प्राप्त हो गई है। गुरबाणी में किसी किस्म की ग़ुलामी को स्वीकार नहीं किया गया और राजनीतिक या धार्मिक एकाधिकारी का खुल कर विरोध किया गया है। इस सिद्धांत का अमल जैसे सिक्ख इतिहास के माध्यम से सामने आया है, वह और कहीं इस तरह प्राप्त नहीं है। इस हालत में अमल के सिद्धांत को जगह सिद्धांत के अमल के साथ जुड़ा हुआ शबद-मॉडल काम आ सकता है। सिक्ख धर्म में किसी भी किस्म की नजर आती भिन्नताओं को मान्यता देने की जगह शबद-मॉडल में एकसुर किया हुआ है। सबसे पहले सिद्धांत और अमल की एकसुरता को मान्यता दी है— *''जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ॥''* संत और सिपाही, भक्ति और शक्ति तथा नियम और प्रेम से प्राप्त एकसुर-मॉडल के द्वारा इसकी पुष्टि हो जाती है। इससे यह परिणाम निकाला जा सकता है कि पश्चिम के राजनीतिक दबदबे और पूरब के बहुसंख्यक धार्मिक समुदायों ने शबद के सिक्ख मॉडल को संभावित भूमिका निभाने से लगातार रोका है। वारिस भी इस दोष में इसलिए शामिल हैं, क्योंकि अभी तक सिक्ख अकादमिकता में शबद का सिक्ख-मॉडल स्थापित करने की तरफ चला ही नहीं है। इसीलिए धर्म-चिंतन की बजाय भाईचारे, भाषा और भूमि को

प्राथमिकता प्राप्त हो गई है। यह राजनीति पर धर्म को प्राथमिकता प्राप्त हो जाने की तरह है। ऐसी हालत में मानवता को ठंडक पहुंचाने का एक रास्ता सिक्ख धर्म-चिंतन के अनुसार सर्वआलिंगनकारी शबद-मॉडल के माध्यम से प्रासंगिक हो सकता स्वीकार किया हुआ है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

शबद-मॉडल के सामर्थ्य का लाभ लिया जाये तो सामने आ जायेगा कि शबद-गुरु ने सरबत्त के भले की भावना के मुद्दई पैदा किये हैं। इस तरह शबद का सिक्ख-मॉडल रूहों की ख़ुराक साबित हुआ है। भाई तारू सिंह जी इसी भावना का प्रतीक हैं। यह भावना सिक्खों का सदाचार बन गई है। शबद-गुरु के साथ आशाएं पूरी हुई हैं और मार्गदर्शन भी हुआ है। माता सुलक्खणी जी ने इस धारणा की अपने अमल से पुष्टि की है। शबद-गुरु ने मानव को भ्रममूलक कर्मों और अज्ञान-कल्पित बंधनों से मुक्ति दिलाई है। ग्लोबली प्रसंग में इसकी सार्थकता काम आ सकती है। इससे आशंकाग्रस्त मानसिकता चढ़दी कला की मालिक हुई है। यह हो चुका है और बार-बार हो सकता है। किसी हद तक यह बयान और इसके पीछे काम करती युक्ति में विश्वासमूलक शरणागत-जज़्बा काम करता नज़र आता है। इसमें से पैदा हुए साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा धर्म-वैज्ञानिक प्रश्नों को यदि ध्यान में रख लिया जाये तो भी शबद-मॉडल की सद-प्रासंगिकता स्थापित करने में मुश्किल पेश नहीं आयेगी। शबद के कर्त्ता बाणीकार, जिस प्रकार शबद में व्यक्त हैं, उनमें शबद की सार्थकता या संदेश में भिन्न नहीं पड़ता। भाई गुरदास जी ने गायक का उदाहरण लेकर बताया है कि जैसे सुर में संगीतकार होकर भी नहीं होता, वैसे ही गुरु का शबद ज्ञान-रूप में होकर भी नहीं होता :

जैसे जंत्र धुनि बिखै बाजत बजंत्री को मन
तैसे घट घट गुर शबद गिआन है ॥२६८ ॥
(कबित्त)

शबद ने देह-प्रसंग भी स्थापित कर देना है। देह और मन का संबंध स्थापित करना मुश्किल नहीं है, परंतु देह और रूह को एकसुर करना मुश्किल है। देह और रूह की एकसुरता *''मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु''* के माध्यम से समझी जा सकती है। यह स्थिति मन का शरीर के साथ नहीं, रूह के साथ एकसुर हो जाने की है। यह शबद में रंगे जाना है। यह मानव का अनुभवी प्रसंग है। इसमें देह पवित्र हो सकती है। पवित्रता, जैविकता पर काबू प्राप्त हो जाने की है। इसका एक तपस्वी मॉडल कायम है, मगर सिक्ख धर्म-चिंतन में तपस्वी मॉडल की जगह शबद-मॉडल की बात की है। शबद में रंगी हुई देह पवित्र हो जाती है :

जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥
(पन्ना ६८०)

शबद में सिमरन द्वारा रंगे जाने की विधि भी शबद-मॉडल का हिस्सा है। यह विधि देखने में सभी धर्मों में एक समान लगती है परंतु जिस तरह गुरु बाणीकारों ने अपने आपको शबद-ज्योति

और शबद-युक्ति में अपना जीवन-काल मिलाया हुआ है, वह किसी अवतार, पैग़म्बर या मसीहा की तरफ से, पहले या बाद में इस तरह नहीं हुआ। सिमरन शबद का माध्यम है और देहधारी दख़ल इसमें से घटा है। सिमरन में शबद या बाणी को केंद्रीयता हासिल है। सिमरन में शबद की सनमुखता को हंढाने की ज़रूरत है। यह ज़रूरत निरंतरता में है, क्योंकि यह मंत्र और चालीसा जैसे परिणाम के साथ जुड़ी हुई नहीं है। शबद के रूबरू होकर मानसिकता बदल सकती है। शबद की कमाई के लिए तपस्वी-माध्यम की आज्ञा नहीं है, क्योंकि शबद का सच शबद के साथ एकसुर होने में माना है :

जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥
जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥
गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ
सचे सचि समाइदा ॥ *(पन्ना १०६०)*

शबद को सुन्न के साथ जोड़ कर देखने की ज़रूरत और अनुभव अतीत अवस्था के सूचक के रूप में ग्रहण करने की जगह श्री गुरु नानक देव जी ने शबद को इज़्ज़त और एतबार-योग्यता के साथ जोड़ कर प्रस्तुत किया हुआ है। (बिनु सबदै नाही पति साखै) ॥ मन की मति शबद से संवरती है। (कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥) यह प्रसंग 'सिध गोसटि' बाणी में से है। योगी तो शबद की बारीक तह की बात कर शबद के एकाधिकार की तरफ बढ़ रहे हैं, परंतु श्री गुरु नानक देव जी शबद का मानवी प्रसंग स्थापित कर रहे हैं। सूक्ष्म अनुभव और मानवी अमल के इस प्राप्त तनाव में से शबद के सिक्ख-मॉडल का प्रसंग स्थापित किया जा रहा है— *''भगता तै सैसारीआ जोडि़ कदे न आइआ ॥''* इस तरह शबद मनुष्य की प्रकृति का निहित जुज़ है— *''सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा . . . ॥''* इसे प्रकट किये जाने की ज़रूरत है, क्योंकि शबद मानव-व्यवहार की धरोहर है— *''इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥''* धर्म के प्राप्त मॉडलों में आध्यात्मिकता की व्यक्तिगत प्राप्ति का ज़िक्र है और यह मार्ग एक हद से आगे आध्यात्मिक एकाधिकार की तरफ चल पड़ता है। जब हरि के संतों को 'अनारम्भ के ठग' कहा है तो व्यक्तिगत उत्तमता की एकहरी और करामाती आड़ में पैदा हो सकने वाली संभावना के प्रति चेतना पैदा करने के लिए ही ऐसा किया गया है। धर्म-चिंतन के साथ जुड़ी हुई अकादमिकता में सैद्धांतीकरण पर दिनों-दिन ज़ोर बढ़ रहा है, मगर इसकी नैतिकता का अमल प्रकट होता नज़र नहीं आ रहा। इसका परिणाम यह निकलता आ रहा है कि धार्मिकता और धर्म या धर्म और रहित की समानांतरता में अंतर आ रहा है। क्षत्रियों ने जब धर्म को धंधे की तरह इस्तेमाल करने के लालच में छोड़ दिया था तो इससे पहले ब्राह्मणों ने धर्म को धंधा बना लेने का रास्ता आसान कर लिया था। पवित्रता की आड़ में धंधा और भी ख़तरनाक हो जाता है। ऐसी दशा में हो श्री गुरु नानक देव जी के मुताबिक मुसलमान कहलवाना मुश्किल हो सकता है। इस दशा में धर्म की प्रसंग-स्थापना की ज़रूरत पड़ती है, क्योंकि धर्म-विहीन युग की कल्पना अभी तक

नहीं की जा सकी। एक पहुँच यह भी रही है कि धरती पर पाप के घटनाक्रम को ख़त्म करने के लिए प्रभु को खुद अवतार धारण कर आना पड़ता है। भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी में इस ज़रूरत की पूर्ति देखी थी। इससे श्री गुरु नानक देव जी का अवतारीकरण नहीं होता, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी ने शारीरिक उत्तमता को प्राथमिकता नहीं दी थी बल्कि शबद-गुरु को निःसंकोच प्राथमिकता प्रदान की हुई है, जैसे कि पहले ज़िक्र कर दिया है। गुरु पातशाह जी के संसार में प्रकट होने से धुंध मिटी है और प्रकाश हुआ है, परंतु यह तुरंत या करामाती युक्ति में उस तरह नहीं हुआ, जिस तरह अवतारीकरण, पैग़ंबरीकरण और मसीहीकरण के साथ होता आया था। यह तो शबद के साथ जुड़ी हुई गुरु-ज्योति और गुरु-युक्ति के द्वारा हुआ है। इससे यह स्थापित हो जाता है कि सिद्धांत में प्राप्त उत्तमता या संपूर्णता अगर अमल में सामने नहीं आती तो धर्म-चिंतन का मूर्तिकरण या करामातीकरण हो जायेगा। सिक्ख धर्म-चिंतन में जिन निर्देशों को अनदेखा कर आध्यात्मिक अमल की जगह धार्मिक दिखावे को प्राथमिकता मिलती जा रही है, इससे पतनोन्मुखी संभावनाएं सामने आ रही हैं। शबद-गुरु का चिंतन इस पतनोन्मुखी धार्मिकता को वैसी मान्यता नहीं दे रहा, जैसी बाकी धर्म-चिंतनों में आम और सुविधाजनक मिलती रही है। ज्योति तो मानव शरीर में जन्म से ही प्रवेश कर जाती है— ''*हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥*''ज्योति के कारण मानव जन्म दुर्लभ है, गोबिंद मिलने के लिए अवसर है और मनुष्यों में फ़र्क न करने का सूचक है। इस ज्योति का प्रकटावा मानव-घटनाक्रम में किस युक्ति में होता है, यह धर्म-चिंतन का असली मुद्दा है। धर्म की पहचान इस बात से होनी है कि उसने कैसी शख्सियत पैदा की है? सिक्ख धर्म-चिंतन में ज्योति प्रकाशित करने के लिए शबद-युक्ति को केंद्रीयता प्राप्त है, क्योंकि ज्योति का अमल-परिप्रेक्ष इस युक्ति में ही स्वीकार किया हुआ है :

इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥
बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥
सबदे नामु रखै उरि धारि ॥
सबदे गति मति मोख दुआरु ॥ *(पन्ना १३४२)*

शबद को बाणी के तौर पर जो विस्तार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्राप्त है, वह और किसी धर्म-चिंतन में नहीं है। यहां इसका विस्तार संभव नहीं है। इसका परिणाम यह निकला है कि सिक्ख धर्म-चिंतन ने आध्यात्मिक सैद्धांतीकरण को एक तरफ़ धरातल मुहैया कर दिया है और दूसरी तरफ़ सैद्धांतिकता के अमल को धार्मिक पहिलताज़गी की कसौटी के रूप में प्रकट कर दिया है। इस समय सैद्धांतीकरण के क्षेत्र में पश्चिम की सरदारी है, क्योंकि पश्चिम की चिंतन लहरें इस समय पश्चिमियों से ज्यादा पश्चिमी होने का तलिस्समी अवसर सारी दुनिया को मुहैया कर रही हैं। इससे सिद्धांत को टैक्स्ट पर प्राथमिकता प्राप्त हो गई है। धीरे-धीरे सिद्धांत ही रह गया है और टैक्स्ट की ज़रूरत ही महसूस नहीं हो रही। यहां इस पक्ष को

समझने के लिए पश्चिमी चिंतकों द्वारा प्रस्तुत मानव जीवन की तीन अवस्थाओं— पहली इंद्रयावी प्राथमिकता से संबंधित है, दूसरी में नैतिक जिम्मेदारियां हैं, जिसमें ऊंचे मंतव्य के लिए निजी लालचों की कुर्बानी करनी पड़ती है और तीसरी में इंसान, प्रभु-संपर्क हासिल कर जाता है। इसे अगर पांच खंडों के प्रसंग में देखना हो तो यह महाचिंतक, आध्यात्मिकता के अथाह सागर की तरफ निहारता ही नज़र आएगा, क्योंकि इसके पास सिद्धांत तो है, परंतु अमल इसलिए नहीं है, क्योंकि सिद्धांत धरातल से बिछड़ा हुआ है। इसी लिए उसे मानव का आध्यात्मिक सफ़र किसी सहज में विकास करने की जगह कूदने-फांदने में ज्यादा नज़र आता है। यह विश्वास और करामात के साथ जुड़ा हुआ चिंतन है। इसी लिए ईसाईअत पर आधारित सैद्धांतिकता, जिसे ईसाईअत की शिक्षा बताया जाता है, भूतमुखी तो है परंतु वर्तमान स्थापित नहीं करती। यह 'सुणीऐ' से प्राप्त पारउतारे की करामाती युक्ति है। इसे पश्चिमी चिंतकों ने सैद्धांतीकरण के लिए इस्तेमाल कर तो लिया है परन्तु इसकी सकर्मकता उस तरह स्थापित नहीं कर सके, जिस तरह प्रेममूलक अमल के साथ सिर की बाज़ी लगाने का संदेश श्री गुरु नानक देव जी के इस सलोक में कायम है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

आखिर में यह कह कर बात खत्म करनी चाहता हूं कि पश्चिमी चिंतन को धरातल सिक्ख धर्म ने प्रदान करना है, क्योंकि शबद के सिक्ख-मॉडल की युक्ति में मानव की सरदारी को कोई जगह प्राप्त नहीं है। इससे सिद्धांत के अमल को मानव जितना रह जाने की मजबूरी से मुक्त कर दिया गया है। फिर अगर किसी भी स्थापित पश्चिमी चिंतक को ले लिया जाये तो कहा जा सकता है कि वह धार्मिक विश्वास के तीन सरोकारों— श्रद्धा, पाप और ईसा को मानता भी है तथा इस आधार पर सैद्धांतिकता में मूर्तिमान करता है। इसमें उसने दुख को मुक्ति के लिए शर्त मान लिया है। भाई कान्ह सिंघ के हवाले से कहा जा सकता है कि इसकी सैद्धांतिकता को इतिहास, उसूल और दलील के प्रसंग में स्थापित नहीं किया जा सकता। दूसरी तरफ़ शबद के सिक्ख-मॉडल में जो शबद-युक्ति प्राप्त है वह चेतना के विश्वास के साथ नहीं, बल्कि अमल की आध्यात्मिता के साथ जुड़ी हुई है :

हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति ना आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

इससे धर्म की सद-प्रासंगिकता स्थापित की जा सकती है। इसलिए कहा जा सकता है कि शबद का सिक्ख-मॉडल, ग्लोबलीकरण की उछल-कूद के साथ निभने के योग्य है और इससे प्राप्त अंतरदृष्टियों को आवश्यक धरातल भी मुहैया हो गया है।

गतांक से आगे

आधुनिक संदर्भ में
गुरुद्वारा साहिब का महत्व समझने की अति ज़रूरत

*-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

यह ब्रह्मांड पाँच तत्वों से मिलकर अस्तित्व में आया है। ये सभी तत्व परमात्मा की हस्ती में से ही निकले हैं। मिट्टी का स्वरूप जीवंत स्वभाव वाला है। यह अणुओं, बिजलाणुओं तक सूक्ष्म से सूक्ष्म मजबूत रखता है। जिस स्थान पर जिस तरह के जीव रहते हैं जैसे उनके कर्म या स्वभाव होते हैं, वह स्थान उनका प्रभाव स्वीकार करता है और उसी तरह की प्रेरणा अन्य जीवों को देता है। गुरु साहिबान की हस्ती तीनों गुणों अर्थात् तीनों अवस्थाओं —रजो, तमो और सतो से ऊपर, माया से निर्लिप्त, परमात्मा के नाम का भंडार निरंकार स्वरूप था। उनकी शख्सियत, उनका दर्शन, उनके वचन भक्ति-भावना की अथाह प्रेरणा का स्रोत थे। उनकी संगत से, उनकी ज्योति से मलिक भागो, कौडा राक्षस, सज्जन ठग बदल गए, वृक्षों के फल मीठे हो गए, खारे पानी के मध्य मीठे पानी के चश्मे बह चले। सतिगुरु की अद्वितीय शख्सियत के बारे में गुरबाणी में वर्णन किया गया है :

—सा धरती भई हरीआवली
जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥
से जंत भए हरीआवले
जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ (पन्ना ३१०)
—जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू
सो थानु सुहावा राम राजे ॥
गुरसिखी सो थानु भालिआ
लै धूरि मुखि लावा ॥ (पन्ना ४५०)
—बाणी गुरू गुरू है बाणी
विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

श्री गुरु नानक देव जी ने चारों दिशाओं में चार उदासियाँ कर नाम की प्रेरणा और निरंकार की पूजा का उपदेश दिया। जहां वे विराजमान हुए गुरसिक्खी चेतना ने उन स्थानों को संभाल कर रखा और वहां पहरा दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इन स्थानों पर जाकर इन्हें सिक्खी के प्रचार-केन्द्र के रूप में प्रकट किया। इन स्थानों की परंपरा में ही बाकी गुरु साहिबान के स्थानों को सिक्खों ने पवित्र स्थान मान कर यादगारें और धर्मसाल (धर्मशाला) बनवाईं। पहले सिक्खी प्रचार-केंद्र का नाम 'धर्मसाल' ही था। जिस प्रकार इस धरती को परमात्मा ने धर्म के प्रचार एवं प्रेरणा का केंद्र स्थापित किया है उसी प्रकार गुरु साहिब ने धर्मसाल बनवा कर धर्म का प्रचार किया। भाई गुरदास जी लिखते हैं :

जिथे बाबा पैरु धरि पूजा आसणु थापणि सोआ।
सिधासणि सभि जगति दे
नानक आदि मते जे कोआ।

**भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९९१५८-०५१००*

घरि घरि अंदरि धरमसाल
होवै कीरतनु सदा विसोआ।
बाबे तारे चारि चकि
नउ खंडि प्रिथवी सचा ढोआ।
गुरमुखि कलि विचि परगटु होआ॥ (वार १: २७)

मोह-माया में सदा ग्रस्त रहने के कारण इस मन को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की मैल लगी हुई है। इस मैल को दूर किये बिना मन का परमात्मा के साथ मेल नहीं हो सकता। सतिगुरु का फरमान है :

मनि मैलै सभु किछु मैला
तनि धोतै मनु हछा न होइ॥ (पन्ना ५५८)

इस मैल के कारण मन-मंदिर में आत्मा का शुद्ध प्रकाश प्रकट नहीं होता। मन की मैल गुरुद्वारे में साधसंगत में सम्मिलित होकर सेवा-सिमरन कर ही दूर हो सकती है। अन्य किसी तरह से यह मैल दूर नहीं हो सकती। गुरबाणी का फरमान है :

भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी॥
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी॥
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी॥
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी॥ (पन्ना ७३०)

गुरमत विचारधारा मुकम्मल विचारधारा है, मुकम्मल इंकलाब की विचारधारा है। यह जहाँ हमें पाताल, आकाश, धरती, खंडों-ब्रह्मांडों का ज्ञान कराती है, वहीं मानव को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्ष से भी पूरी तरह से नेतृत्व प्रदान करती है। गुरमत मानव को भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान प्रदान करती है। यह ज्ञान और विज्ञान श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विशाल रूप में विद्यमान है। यह अकाल पुरख की तरफ से गुरु साहिबान के माध्यम से प्रकट की गई 'धुर की बाणी' है, जो पारब्रह्म और ब्रह्मांड का ज्ञान कराती है। गुरसिक्खों को गुरबाणी को सत्य कर मानने का उपदेश है। फरमान है :

सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु
हरि करता आपि मुहहु कढाए॥ (पन्ना ३०८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश गुरुद्वारा साहिब में किया जाता है। इस प्रकार गुरुद्वारा साहिब जहाँ आत्मा और परमात्मा के मेल-मिलाप कराने का पवित्र स्थान है वहीं यह मानव को मुकम्मल जीवन-युक्ति प्रदान करने का स्रोत भी है। जिस तरह काया के अंदर आत्मा अकाल पुरख की ज्योति-स्वरूप है, उसी तरह गुरुद्वारा शरीर रूप में और श्री गुरु ग्रंथ साहिब शबद-गुरु अकाल पुरख के ज्योति स्वरूप में विद्यमान है। सतिगुरु का फरमान है :

काइआ महलु मंदरु घरु हरि का
तिसु महि राखी जोति अपार॥ (पन्ना १२५६)

गुरुद्वारा साहिब सिक्ख संस्कृति का केंद्र है। गुरुद्वारा साझीवालता, विश्व-भाईचारे, सरबत्त के भले, किरत करने, वंड छकने, नाम जपने, सेवा-सिमरन करने, परोपकारी होने, उद्यम करने, उत्तम आचार-व्यवहार और किरदार, विनम्रता, अपने फर्जों की पूर्ति हेतु दृढ़ता, हक, सच और धर्म के लिए जूझने, न्यायशील राज्य, बेसहारों का सहारा बनने, कुर्बानी और त्याग एवं जीवन-मुक्त होने के महान व विलक्षण सिद्धांत का स्रोत है। गुरुद्वारे की शिक्षा ईर्ष्या, द्वेष, धार्मिक कट्टरता, कर्मकांड, पाखंडवाद, निठल्लापन, झूठ-कपट, अहंकार, ऊँच-नीच, जात-पांत के भेदभाव, नशों का सेवन,

लूट-मार, अश्लीलता, नग्नवाद तथा हर किस्म के शोषण का ज़ोरदार खंडन और विरोध करती है। गुरुद्वारा साहिब मानव को अपने स्रोत और विरासत के साथ जुड़े रहते हुए, भरपूर जीवन जीते हुए भविष्यमुखी होकर विचरण करने एवं समय के साथी बनने का उपदेश देता है।

आज गाँवों और शहरों में गुरुद्वारा साहिबान की संख्या बहुत बढ़ रही है। यह बात ख़ुशी वाली है, मगर चिंताजनक पहलू यह है कि अधिकांश गुरुद्वारा साहिबान के निर्माण के साथ-साथ वहां हमारे अहंकार, नेतागिरी और प्रधानगिरी की चमक दिखाई देने लगती है। गुरुद्वारा साहिबान का इतनी अधिक संख्या में निर्माण होने के बावजूद सिक्खी-सिद्धांत, सिक्खी-स्वरूप और आस्था कम हो रही है। पाखंड, कर्मकांड, पतितपनता, मादा-भ्रूण-हत्या, दाज-दहेज, नशे, नग्नवाद, फ़ैशनप्रस्ती, अश्लीलता तथा अन्य जरायमपेशा रुचियाँ बढ़ रही हैं, जो गहरी चिंता का विषय हैं। कीर्तन समागम बहुत हो रहे हैं, नगर कीर्तन भी सजाए जा रहे हैं और नारे-जैकारे भी बहुत लगाए जा रहे हैं। ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि यह सब कुछ हमारी महान विरासत और मान-मर्यादा का ही हिस्सा हैं। चिंता इस बात की है कि हम सतिगुरु के महान और विलक्षण फलसफे व उपदेश से विहीन हो रहे हैं, क्योंकि शबद की विचार कम हो गई है। कथा होनी बहुत ज़रूरी है, परन्तु कथा में छिपे असली रहस्य की व्याख्या कम हो रही है। श्री गुरु अरजन देव जी ने कथा और कीर्तन की सेवा भाई गुरदास जी को देकर इस परंपरा के साथ सभी गुरसिक्खों को जुड़ने का उपदेश दिया। भाई गुरदास जी इस बारे में इस तरह फरमान करते हैं :

गुरबाणी भंडारु भरि कीरतनु कथा रहै रंग रता।

(वार २४: १९)

गुरु साहिब ने गुरु-शब्द की विचार पर ही ज़ोर दिया है। फरमान है :

सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु॥
डिठै मुकति न होवई
जिचरु सबदि न करे वीचारु॥ (पन्ना ५९४)

इसी तरह और भी दुखदायक एवं चिंता का विषय यह है कि गुरुद्वारा साहिबान जातियों तथा कबीलों के आधार पर बन गए हैं और बन भी रहे हैं। यह गुरुद्वारा साहिब के मूल सिद्धांत और दर्शन के बिलकुल विपरीत है। गुरु साहिबान ने सारे समाज को इकट्ठा करने और एक सूत्र में पिरोने के लिए महान यत्न किये, परंतु जातियों और कबीलों के आधार पर गुरुद्वारा साहिब बनने के कारण गुरुद्वारा साहिबान के सम्मान के साथ खिलवाड़ हो रहा है। ऐसा करने से ऊँच-नीच की भावनाएं पैदा हो गई हैं और समाज विखंडित हो रहा है। जाति-आधारित नफ़रत भी फैल रही है।

गुरु-सिद्धांत की निर्मल दिशा में यह सुझाव है कि गुरु-घर की सेवा-संभाल करने एवं प्रबंध चलाने हेतु उन सज्जनों की ही नियुक्ति होनी चाहिए है जिनकी टेक सतिगुरु पर हो। उनके अंदर चरित्र, ज्ञान, श्रद्धा और सत्कार विशुद्ध और भरपूर होना चाहिए। उनकी केवल "रोटीआ कारणि पूरहि ताल" वाली हालत नहीं होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था को सुनिश्चित कर गुरुद्वारा साहिबान की पवित्रता को कायम रखा जा सकता है।

गुरुद्वारा साहिबान का उद्देश्य और उपदेश महान है। इनकी सेवा-संभाल और प्रबंध के लिए वही

योग्य व्यक्ति ही आगे आएं जो निष्काम, निष्कपट, ऊँच-नीच की भावना से रहित, केवल और केवल श्रद्धा एवं समर्पण की भावना वाले हों। उनको गुरमत ज्ञान, महान सिक्ख विरासत, सिक्ख इतिहास और गुरु-मर्यादा के बारे में पूरी समझ हो। गुरुद्वारा साहिबान के कुप्रबंध के बारे में भाई गुरदास जी इस तरह सचेत करते हैं :

बाहर की अगनि बूझत जल सरिता कै,
नाउ मै जउ अगनि लागै कैसे कै बुझाईऐ ॥
बाहर सै भागि ओट लीजीअत कोट गड़,
गड़ मै जउ लूटि लीजै कहो कत जाईऐ ॥
चोरन कै त्रास जाइ सरनि गहै नरिंद,
मारै महीपति जीउ कैसे कै बचाईऐ ॥
माइआ डर डरपत हारि गुरदुआरै जावै,
तहा जउ माइआ बिआपै कहा ठहराईऐ ॥५४४ ॥

(कबित्त, भाई गुरदास जी)

विज्ञान और ज्ञान के इस युग में डेरावाद और देहधारी गुरु-डंम का खूब बोलबाला है। बहुत-से डेरेदार, ढोंगी, तथाकथित साध, पाखंडी बाबा लोगों की अनपढ़ता व अज्ञानता और उनके अंदर हद से अधिक इच्छाओं एवं तृष्णाओं की शीघ्र पूर्ति और प्राप्ति की इच्छा को भाँपते हुए जो अपने आप को ईश्वर कहलवाते हैं, बड़े-बड़े चोले पहन कर साथ चेलों की भीड़ लेकर लोगों का पूरा शोषण कर रहे हैं, ऐसे ढोंगी बाबा के बारे में गुरु नानक साहिब ने फरमान किया है :

चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥
तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥
मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥

(पन्ना ७५१)

ऐसे ढोंगी अपनी इच्छाओं और तृष्णाओं पर काबू नहीं पा सकते, बल्कि वे क्रोध से भरपूर अहंकार में ग्रस्त बहुरूपिये हैं। ऐसे छलिए और कपटिओं के प्रति गुरबाणी इस प्रकार सचेत करती है :

कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ
लोभु न छूटिओ देवा ॥
पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥

(पन्ना १२५३)

कई किस्म के दंभ और पाखंड कर ये लोग अपने वेतनभोगी पालतू चेलों तथा मुखबिरों के माध्यम से लोगों को लूट कर अपनी ऐशो-इशरत में गलतान हैं और अपनी तोंद बढ़ा रहे हैं। गुरबाणी में ऐसे मनुष्य के बारे में इस तरह फरमान है :

—फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥
नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥

(पन्ना ७९०)

—घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ
खिंथा मुंदा माइआ ॥ *(पन्ना ५२६)*
—करि परपंचु जगत कउ डहकै
अपनो उदरु भरै ॥१ ॥
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो
कहिओ न कान धरै ॥ *(पन्ना ५३६)*

पाखंडी लोग जनसाधारण को रहमत देने का ढोंग करते हैं, जबकि रहमत केवल अकाल पुरख ही प्रदान कर सकते हैं। दुनिया की अन्य कोई शक्ति इसके योग्य नहीं है। कवि कंकण लिखते हैं कि सरवंशदानी दसम पातशाह ने अपने सिक्खों को ऐसे दंभियों से सचेत करते हुए समझाया है :

कलि महि होहिं पखंड अनेका ॥

सो मम सिख न मानै एका ॥
टामन कर कोउ भीत नचावै ॥
तो भी मम सिखन नही भावै ॥
निज अंगूरी ते दूध चुआवहि ॥
आप आप को गुरू कहावै ॥
जो जुवतन मुझ ते थापी लेवहि ॥
तिन को हम पुत्र फल देवहि ॥

ऐसे दंभी और पाखंडी लोगों के बारे में शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी 'सुखमनी साहिब' में इस तरह फरमान करते हैं कि ये स्वयंभू ईश्वर' हमेशा गर्भ-अग्नि में जलते-मरते रहते हैं। गुरु-वाक है:

जब इह जानै मै किछु करता ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ (पन्ना २७८)

ऐसे बाबा लोगों के बारे में गुरु जी समझाते हैं कि ये तो यहीं समाप्त हो जाएंगे, मिट्टी में रुल जाएंगे और आम लोगों का कुछ भी नहीं संवार सकेंगे। केवल और केवल सच्चे संत ही लोक एवं परलोक में सहायक होंगे। गुरु-वाक है :

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि
ढूढि सजण संत पकिआ ॥
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ
मुइआ न जाही छोड़ि ॥ (पन्ना ११०२)

ये पाखंडी लोग झूठे हैं। खुद बुरे कर्म करते हैं, परन्तु लोगों को शुभ कर्म करने की शिक्षा देते हैं। ये लोग अपना जीवन तो बरबाद करते ही हैं अपने साथ अपने साथियों को भी डुबो देते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ऐसे लोगों के बारे में फरमान करते हैं :

कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥
अवरी नो समझावणि जाइ ॥
मुठा आपि मुहाए साथै ॥
नानक ऐसा आगू जापै ॥ (पन्ना १३९)

कई डेरेदारों ने लोगों को बहलाने-फुसलाने के लिए अति घटिया दर्जे की काव्य पंक्तियां भी बना रखी हैं, जिसके माध्यम से ये बाणी के तौर पर प्रचार करने का घोर अपराध भी कर रहे हैं। गुरबाणी के असली अर्थों की जगह अनर्थ कर अपने आप पर ढाल लेते हैं। इस कच्ची बाणी में इन बाबा लोगों के नकली गुणों का बखान ही किया होता है। परमात्मा की उपमा की बात नहीं की जाती। कच्ची बाणी के बारे में श्री गुरु अमरदास जी ने 'अनंदु साहिब' बाणी में फरमान किया है :

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥
कहदे कचे सुणदे कचे कची आखि वखाणी ॥
(पन्ना ९२०)

श्री गुरु रामदास जी का सतिगुरु की नकल कर कच्ची बाणी गायन करने वालों के प्रति फरमान है :

सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे
से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥
ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है
बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥ (पन्ना ३०४)

ये तो झूठ की दुकानें हैं, जहां झूठ का व्यापार हो रहा है। इन स्थानों पर घटिया सोच, समझ और बिगड़ी आदतों वाले लोग ही विचरण करते हैं। ऐसे लोगों के बारे में श्री गुरु नानक देव जी ने फरमान किया है :

चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥

वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥
सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥

(पन्ना ७९०)

ऐसे डेरेदार लोगों को मनमुख ही कहा जा सकता है, क्योंकि ये गुरु से विमुख हैं और अपनी तृष्णा की पूर्ति करने एवं धन जोड़ने की लालसा के कारण भोले-भाले लोगों को अकाल पुरख के साथ जोड़ने की जगह अपने साथ जोड़ते हैं। श्री गुरु रामदास जी ने ऐसे मनमुखों और धन के लोभी लोगों के प्रति इस तरह फरमान किया है :

मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥
कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥
बिखु माइआ धनु संचि मरहि
अंति होइ सभु छारु ॥
करम धरम सुचि संजमु
करहि अंतरि लोभु विकारु ॥
नानक मनमुखि जि कमावै
सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥

(पन्ना १४२३)

आओ ! असली और नकली का फ़र्क समझें ! झूठ को त्याग कर सत्य का पल्लू पकड़ें। यह तभी हो सकेगा यदि हम गुरु-घर की शिक्षा लेंगे, शिक्षा को अपने जीवन में ढालेंगे और गुरमत मार्ग के पथिक बनेंगे। हम गुरु नानक नाम-लेवा कहलाने वाले लोग भी पदार्थवाद की दौड़ में अंधाधुंध लगे हुए हैं। यह रुझान अति ख़तरनाक और जानलेवा सिद्ध हो रहा है। जिन गुरसिक्खों, सेवकों और संतों-महापुरुषों ने जीवन सफल कर लिया है उनके बारे में भक्त कबीर जी इस तरह फरमान करते हैं :

हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे ॥
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥

(पन्ना ८५५)

अफ़सोस और दुख की बात है कि आज गुरुद्वारा साहिब के अस्तित्व, हस्ती, सिद्धांत, स्वरूप और महान उपदेश पर अंदरूनी तथा बाहरी हमले हो रहे हैं। ऐसा निश्चय ही बहुत गहरी साजिश के अधीन किया जा रहा है। हम बेपरवाह ही नहीं बल्कि छोटे छोटे निजी लाभ की पूर्ति की खातिर पदार्थवाद की अंधी दौड़ में लग कर, अश्लीलता, फ़ैशनपरस्ती तथा नशों का शिकार व अपनी महान परंपराओं से कोरे होकर विलक्षण सिद्धांत को तिलांजलि देकर अपनी गौरवमयी रिवायतों को आँखों से ओझल कर अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मार रहे हैं। दूसरी तरफ़ गुरमत सिद्धांत और गुरुद्वारा साहिबान की विरोधी शक्तियां— डेरावाद, पाखंडवाद, कर्मकांड और दंभियों को हर तरह से उत्साहित ही नहीं कर रही, बल्कि उनकी सुरक्षा भी यकीनी बना रही हैं। यहां वास्तविकता को काल्पनिक कहानियों में तोड़-मरोड़ कर, पवित्र बाणी के अनर्थ कर लोगों के अंदर भ्रम खड़े कर नकली को असली समझने का मंत्र दृढ़ करवाया जा रहा है। गुरु साहिबान ने जगत के इस महान विलक्षण और आलौकिक गुरमति सिद्धांत को दृढ़ कराने के लिए अति कठिन संघर्ष किया, शहादत दी, सरवंश कुर्बान कर दिया। गुरमत सिद्धांत और गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल के लिए अनगिनत श्रद्धावान और दृढ़-संकल्पी परवानों ने शीश कटवा लिए तथा शरीर आरों के साथ चिरा लिए, खोपड़ी उतरवा ली,

चरखियों पर चढ़ गए, जंड (वृक्ष) के साथ बाँध कर शहीद कर दिए गए, देग में उबाले गए, बंद-बंद कटवा लिए, मासूम शीरखोर बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवा कर झोलियों में डलवा लिए, बच्चों की आँतों के हार अपने गले में डलवा लिए, परन्तु धैर्य और धर्म नहीं हारा।

दूसरी तरफ़ आज हम क्या कर रहे हैं? हमारा जीवन और जीवन-लक्ष्य क्या है? क्या हम इस महान विरासत के वारिस कहलवाने के योग्य हकदार हैं? आत्मविश्लेषण करें कि कहीं हमने भी गुरु को बेदावा (सम्बन्ध विच्छेद-पत्र) देकर गुरुद्वारा साहिब की तरफ पीठ तो नहीं कर ली है? चुपचाप सब कुछ देख, सुन कर सहन कर रहे हैं। भक्त कबीर जी ने ऐसी शोचनीय हालत के बारे में इस तरह बयान किया है :

कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥

(पन्ना १३७६)

हम जिस झूठे वजूद और हस्ती के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा रहे हैं वह वजूद और हस्ती कसुंभड़े के फूल की तरह है। बाबा शेख फ़रीद जी ने सचेत करते हुए फरमान किया है :

हथु न लाइ कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥

(पन्ना ७९४)

यह सब *''जो दीसै सो सगल बिनासै''* के सिद्धांत के अनुसार मिट जाएगा। यदि हम अभी भी न जागे या हमने अभी भी अपनों आत्म-परस्तों से निजात न पाई तो जीते जी मुर्दों के समान हो जायेंगे। आओ! अभी भी सचेत हो जाएं। कहीं ऐसा न हो कि हम भी बैबेलोनिया और मैसोपोटामिया की महान सभ्यताओं की तरह मिट जाएं! जिन तथाकथित दुनियावी वारिसों के लिए अपनी महान विलक्षण विरासत, सिद्धांत और गुरु-स्थान बरबाद करने के लिए तैयार हैं, वे हमारे कल्याण में कदापि सहायक नहीं होंगे। वे तो खुद नाशवान हैं। सतिगुरु का फरमान है :

मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥

(पन्ना ७००)

सतिगुरु ने इसे और स्पष्ट किया है। फरमान है :

जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥

(पन्ना ४२)

आओ, अब भी संभल जाएं! झूठ, लालच, मोह, झूठी शोहरत और अहंकारी वृत्ति त्याग कर धर्मी जीवन जीते हुए, अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति करते हुए, अपना जीवन सफल करें और अपने वारिसों के लिए महान, बेमिसाल, आलौकिक विरासत को संभाल कर सुरक्षित रख सकें, सतिगुरु के प्रति अपना फ़र्ज़-ए-अव्वल निभा सकें। यही गुरुद्वारा साहिब का महान उपदेश है :

—सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥

(पन्ना ३०४)

—कहु नानक सतिगुर बलिहारी
जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ *(पन्ना ७८३)*
—बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ
कलि उधरी इक नाम धरम ॥
प्रगटु सगल हरि भवन महि
जनु नानकु गुरु पारब्रहम ॥ *(पन्ना १३८७)*

गुरू मानिओ ग्रंथ

*-डॉ. जगजीत सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सारे संसार का, सारी मानवता का, विशेष तौर पर सिक्ख धर्म का अनमोल एवं अद्वितीय ख़ज़ाना है। ऐसी गवाही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादक श्री गुरु अरजन देव जी ने ख़ुद निम्न शब्द में भरी है :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१ ॥रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१ ॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२ ॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥३ ॥
कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥४॥ (पन्ना १८५)

भावार्थ : गुरबाणी के माध्यम से जैसे-जैसे हम मिल कर परमात्मा के गुण गाते हैं, सच्चे प्रभु के नाम की बरकत से हम नाम-धन के धनी बनते जा रहे हैं, भाग्यशाली बनते जा रहे हैं, आत्मिक स्थिरता में टिक कर प्रभु-प्रेम में मग्न रहते हैं।

२. जब मैंने (गुरु महाराज ने) श्री गुरु नानक देव जी से लेकर सारे गुरु साहिबान की बाणी का ख़ज़ाना खोलकर देखा, तब मेरे मन में आत्मिक आनंद का भंडार भर गया।

३. बाणी के इस खजाने में परमात्मा की सिफत-सालाह (उपमा) के अमूल्य रत्नों, लालों के भंडार भरे हुए (मैंने) देखे, जो कभी ख़त्म नहीं हो सकते, जो तोले नहीं जा सकते।

४. जो मनुष्य सतसंग में जुड़ कर इन अनमोल भंडारों का स्वयं लाभ उठाते हैं और दूसरों को भी बांटते हैं, उनके पास इस खजाने की कमी नहीं होती, बल्कि और भी विस्तार होता है।

५. गुरु महाराज फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य के माथे पर परमात्मा की बख्शिश का लेख लिखा होता है, वही इस अनमोल खजाने में साझेदार बनाया जाता है अर्थात् वही साधसंगत में आकर सिफत-सालाह कर बाणी का आनंद उठाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब श्री अमृतसर नामक पावन स्थल पर १६०१-१६०४ ई. में संपन्न हुई। संपादना के बाद इसका पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब में भादों सुदी १, संवत् १६६१ को हुआ। बाबा बुड्ढा जी इसके पहले ग्रंथी नियुक्त किए गए।

अमृत सरोवर में सुस्थित श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब श्री गुरु अरजन देव जी की मानवता को पहली अद्वितीय देन थी, जिसके चार दरवाज़े न केवल हिंदू समाज के सभी वर्गों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य का साझे धर्म-स्थान में अभिवादन कर रहे हैं, बल्कि इसके साथ ही प्रसिद्ध सूफ़ी फ़कीर हज़रत साँईं मियां मीर जी से श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार

**२५, फेस-७, मोहाली—१६००६१; फोन : ९७७९८-१६९०९*

साहिब की नींव रखवाने की प्रक्रिया ने मुसलमान भाइयों का भी इस हरि मंदिर साहिब, श्री दरबार साहिब की साझीवालता में अभिनंदन किया। ऐसे में श्री दरबार साहिब के निर्माण से ईर्ष्या, द्वैत, वैर-विरोध की चिंता ख़त्म होने लगी। श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी के बोहिथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को उच्च स्थान पर स्थापित कर यह संदेश दिया कि गुरु-शबद उनकी हस्ती से अधिक आदरणीय है। रात को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सुख-आसन पलंग पर होता और आप जी नीचे फर्श पर ही विराजमान होते। आप जी की पारदर्शी दृष्टि इस तथ्य से परिचित थी कि *''पोथी परमेसर का थानु''* हैं और श्री गुरु ग्रंथ साहिब युगो-युग अटल गुरु-रूप होकर प्रवानित होंगे।

समय पाकर ऐसा ही हुआ। १७०८ ई. में नांदेड़ (श्री हजूर साहिब) में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब को माथा टेका और *''सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ''* का आदेश दिया। इस तरह समूचे मानव-समाज को और विशेष रूप से सिक्ख पंथ को युगो-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छत्र-छाया में लाकर *''बाणी गुरू गुरू है बाणी''* का प्रत्यक्ष प्रमाण पेश किया। इस अवसर पर जो हुकमनामा प्राप्त हुआ वह इस प्रकार है:

सारू महला ५ ॥
खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर
कीरतनु हरि हरि गाई ॥
स्रमु थाका पाए बिस्रामा
मिटि गई सगली धाई ॥१ ॥
अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥
चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता
संतन की सरणाई ॥१ ॥रहाउ ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥
सद हजूरि हाजरु है नाजरु
कतहि न भइओ दूराई ॥२ ॥
सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई ॥
पावन पतित कीए खिन भीतरि
महिमा कथनु न जाई ॥३ ॥
निरभउ भए सगल भै खोए
गोबिद चरण ओटाई ॥
नानकु जसु गावै ठाकुर का
रैणि दिनसु लिव लाई ॥४ ॥ (पन्ना १०००)

यह हुकमनामा, यह फरमान भी मानो कि अकाल पुरख की तरफ से सारी मानवता को कीर्ति गायन करने का उपदेश है। जिज्ञासु की भाग-दौड़ और संघर्ष ख़त्म हो गया, शबद-गुरु ने आराम बख्शिश किया और जीवन-पदवी की प्राप्ति हुई। गुरु की शरण में आकर अकाल पुरख चित्त में आ बसा है, जिस कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह और सारे वैर-विरोध, झगड़े ख़त्म हो गए हैं। गुरु-शबद ने सद-हजूरी बख्शिश की। दूरियां ख़त्म हो गई हैं। प्रभु निकट, प्रत्यक्ष, हाजर-नाजर दिख रहा है। गुरु सहायक हुए हैं। सब इच्छाओं की पूर्ति हो गई है। अंदर सुख, शीतलता का निवास हो गया है। गुरु-शबद की महिमा बयान नहीं की जा सकती, जिसने पतित को पल भर में पवित्रता बख्शिश कर दी है, सारे भय ख़त्म कर निर्भय पदवी प्रदान की है। अब टिके हुए मन में दिन- रात प्रभु-यश गायन करने की अवस्था बन आई है। ऐसा महान उपदेश संगत को, सारी मानवता को प्राप्त हुआ है।

निस्संदेह श्री गुरु ग्रंथ साहिब रूहानियत का अथाह समुद्र हैं, जिसमें बिना किसी जाति, नस्ली भेदभाव से सारी मानवता डुबकी लगा कर चौथे पद

अर्थात् परम पदवी को प्राप्त कर सकती है। *''एकु पिता एकस के हम बारिक''* का उपदेश देती गुरबाणी *''न को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥''* का जाप करवाती गुरबाणी वैर-विरोध के अंतर को खत्म कर सारी मानवता को प्रभु-प्यार और साझीवालता की आगोश में लेती 'बेगमपुरा' का निवासी बनने के लिए उत्साहित करती है। सर्व-साझेदारी के प्रतीक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ६ सिक्ख गुरु साहिबान (पहली पांच पातशाहियां और नौवें पातशाह श्री गुरु तेग़ बहादर जी) की बाणी के साथ-साथ अन्य महापुरुषों की बाणी को भी वही सम्मान प्राप्त है जो गुरु की बाणी को प्राप्त है। इसमें शामिल भक्त-जन तथाकथित ऊँची जाति में से भी हैं, कुछ तथाकथित निचली जाति में से भी हैं। मुसलमान-दरवेशों के कलाम को भी सम्मान मिला। भक्त-बाणी प्रवान करने की कसौटी एक ही थी :

मनु सच कसवटी लाइऐ तुलीऐ पूरै तौलि ॥

(पन्ना २२)

जो सत्य की कसौटी पर पूरे उतरे, उन्हें सम्मान दिया गया। आशा यह थी कि बाणी के माध्यम से ईश्वरीय प्यार, सत्य, शांति, सहज, नम्रता, मिठास, साझीवालता और मानवता का उपदेश दृढ़ हो; आत्मिक शांति के साथ-साथ समाज और देश का उद्धार हो। गुरु साहिबान ने इन उपदेशों को व्यवहारिक रूप से दृढ़ करवाया। सर्व-साझे धर्म-स्थान, साझी संगत, साझी पंगत, किरत करो, नाम जपो और वंड छको के साझे उपदेश, सरबत्त के भले को अरदास गुरबाणी के ऊंचे सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप प्रदान करते हैं। इस तरह गुरबाणी मानवता को संकीर्णता, सांप्रदायिकता, जाति और पदवी-अभिमान से मुक्त कर सर्वहितकारी एवं परोपकारी मानव बनने के लिए उत्साहित करती है। यह सिद्धांत दिया कि मनुष्य का पार-उतारा अच्छे कामों के द्वारा ही होना है, न कि तथाकथित ऊंची जाति या कुल में जन्म लेने के कारण :

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥

(पन्ना १३३०)

मायाधारी अभिमानी को चेतावनी दी कि बिना पाप के धन इकट्ठा नहीं होता और यह सत्य है कि इकट्ठा किया धन कभी साथ नहीं जाता :

इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥

(पन्ना ४१७)

सच्ची-सुच्ची किरत कर जीवन-निर्वाह करो और इस किरत में से ज़रूरतमंदों की सहायता करो। यही ठीक रास्ता है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

लूट-मार कर, दूसरों के अधिकारों पर डाका डालने वाला मनुष्य कभी धार्मिक नहीं होता :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥

(पन्ना १४१)

सब में वाहिगुरु की ज्योति विद्यमान है। उसकी रौशनी ही सब तरफ़ पसर रही है। यह ज्योति गुरु की शिक्षा द्वारा प्रकट होती है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ *(पन्ना १३)*

नाम, जप, सिमरन को सर्वोत्तम धर्म माना है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ (पन्ना २६६)

इसलिए गुरसिक्ख की परिभाषा में पहली शर्त नाम जपना है :

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना
मन तन भए अरोगा ॥ (पन्ना ६११)

गुरबाणी को गुरु रूप जानने की बार-बार ताकीद की :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

गुरबाणी के अनुसार जीवन-मुक्त अवस्था प्राप्त करनी सर्वोत्तम प्राप्ति है। श्री गुरु अरजन देव जी जीवन-मुक्त होने के लिए मार्ग-दर्शन करते हुए फरमान करते हैं :

प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥
(पन्ना २७५)

गुरबाणी ईर्ष्या, द्वैत की अग्नि में जलते मनुष्य का कल्याण मांगती है, विश्व की सारी मानवता के लिए सुख, शांति की प्रार्थना करती है, चाहे इसकी प्राप्ति के लिए कोई भी रास्ता अपनाया जाये :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

आज के वैज्ञानिक युग में भी बहुत-सी मानवता धर्मों की संकीर्णता के कारण वैर विरोध के झगड़ों और फ़सादों में जीवन बर्बाद कर रही है। आज सारी मानवता को *''एकु पिता एकस के हम बारिक''* का संदेश देने की ज़रूरत है। गुरबाणी बार-बार दृढ़ करवाती है :

सभे साझीवाल सदाइनि
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षा के अनुसार सारी मानवता का एक ही धर्म है— सत्य को धारण करना, सच्चे कार्यों द्वारा मानवता की सेवा करनी और सच्चा पद प्राप्त करना :

सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

गुरबाणी के अनुसार सारी मानवता अपनी-अपनी विरासत में प्राप्त हुए मजहब में रहकर, सच्चे-शुद्ध मानव बनने, फिर चाहे कोई हिंदू हो या मुसलमान, ईसाई हो या यहूदी, सिक्ख हो या बुद्ध धर्म का अनुयायी, बाहरी पहनावे से कोई फर्क नहीं पड़ता, परंतु मूलभूत गुणों का धारक होना आवश्यक है, तभी जीवन सुखी-सुहेला होगा। गुरबाणी में ऐसे अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं जिनमें अच्छे सिक्ख, सच्चे-शुद्ध मुसलमान, पूज्य ब्राह्मण, असल क्षत्रिय, सच्चे योगी की परिभाषा और लक्षण बताए हैं। सच्चाई और नेकी ऊंचे किरदार में है न कि बाहरी दिखावे में।

पूर्ण गुरसिक्ख की अवधारणा के प्रकट रूप : बाबा बुड्ढा जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु नानक साहिब ने ऐसे मनुष्य की कल्पना की जो धर्म को समझने वाला और परमात्मा की महानता को देख सकने की दृष्टि का धारक हो। ऐसा मनुष्य अपने जीवन को गुणों से इस तरह संयमित कर ले जिससे उसके जीवन की राह सरल हो जाये। श्री गुरु नानक साहिब के सिक्ख के लिये यही सच्चा जप और तप था। संसार में धर्म-पालन के अनेक मार्ग थे। कोई परिवार-संसार त्याग वन-गमन कर जाता, कोई भिन्न-भिन्न यज्ञ करता, तपस्या, साधना करता। कोई योग, हठ, दान में विश्वास करता। कोई धर्म-ग्रन्थों का ज्ञान अर्जित करने में व्यस्त था। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा दिखाया मार्ग सरल भी था और सबसे कठिन भी। यह सागर में यात्रा करने के लिये स्वयं जहाज तैयार करने जैसा था। एक ऐसा जहाज, जो सुगमता से यात्रा संपूर्ण करने में सहायक हो। श्री गुरु नानक साहिब ने फरमान किया— *''जप तप का बंधु बेडुला जितु लंघहि वहेला॥''* श्री गुरु नानक साहिब के अनन्य सिक्ख बाबा बुड्ढा जी, जिनका मेल गुरु साहिब से मात्र बारह वर्ष की आयु में होने का सुअवसर बन गया था, ऐसा बेड़ा तैयार करने में सफल हो गये थे। श्री गुरु नानंक साहिब ने उन पर कृपा की। उन्हें जीवन व मृत्यु के बीच का भेद पता चल गया। उनका मृत्यु का भय जाता रहा। इसके साथ ही जीवन का मोह भी छूट गया। यही जप और तप था, जिसे सिद्ध कर बाबा बुड्ढा जी उस अवस्था में जा पहुंचे थे जहां न तो कामनाओं का शोर व उछाल था और न ही सांसारिकता का आकर्षण। इससे उनके जीवन का जहाज बिना किसी अवरोध सम्यक गति से आगे चलने लगा। उनके मन में यदि भावना थी तो गुरु साहिब के लिये और समर्पण था तो बस परमात्मा के प्रति। वे परमात्मा के प्रेम में रंग गये— *''तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला॥''*

बाबा बुड्ढा जी जब बाल्यावस्था में थे तब अन्य बच्चों से अलग वे मृत्यु के बारे में सोचा करते थे और चिंतित रहा करते थे। इस मन:स्थिति के बावजूद उनके मन में संतों-महात्माओं के लिये आदर का भाव था। तभी जब उन्हें श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन हुए तो भावनावश उनके पास गये व नित्य कुछ न कुछ भेंट करने लगे। श्री गुरु नानक साहिब ने कृपा कर उन्हें सच का ज्ञान दिया। सच जानने की कोई आयु नहीं होती, मन में जिज्ञासा होनी चाहिये। सच धारण करने की कोई विधि नहीं होती, मन का संकल्प ही काम आता है। सारी साधना मन की होती है।

जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी॥
सूखी करै पसाउ दूख विसारसी॥

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८९९*

सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥ *(पन्ना ७२९)*

श्री गुरु नानक साहिब ने पांच तत्वों से मिल कर बने नाशवान तन और तन द्वारा की गई क्रियाओं की इसमें कोई भूमिका नहीं देखी थी। श्री गुरु नानक साहिब ने वचन किये कि परमात्मा के लिये मन की भावना, अंतर की निर्मलता महत्वपूर्ण है। उसके दरबार में इसी का सम्मान है। वह निर्मल भावना वालों को निहाल, निहाल कर देता है और उनका जीवन खुशियों से भर देता है। किसी भी तरह के दुख का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं रहता। गुरु साहिब ने कहा कि ऐसे लोगों के मन में परमात्मा की कृपा से कोई भ्रम, कोई दुविधा नहीं रहती और मन परमात्मा के चरणों में पूरी तरह जुड़ जाता है। इस तरह जीवन का उद्धार होता है।

बाबा बुड्ढा जी के जीवन में श्री गुरु नानक साहिब के इन वचनों के सारे रंग उभर कर सामने आये। उन्होंने मन को साध कर बेड़ा तैयार किया और श्री गुरु नानक साहिब के सिक्ख बन गये। बाबा बुड्ढा जी गुरसिक्खी के मार्ग पर बिना किसी संकोच के चल पड़े। कोई नई राह जब सामने होती है तो शंका स्वाभाविक होती है, किन्तु जब गुरु राह दिखाता है तो किसी दुविधा की कोई संभावना नहीं रहती। श्री गुरु नानक साहिब ने इसे भिन्न परिप्रेक्ष्य में देखा जो उनकी परमात्मा रूप अवस्था का परिचायक था। उन्होंने राह की सफलता का श्रेय स्वयं गुरसिक्ख को देते हुए वचन किये— *''जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥''* बाबा बुड्ढा जी करतारपुर साहिब आ गये थे। उनका जीवन गुरु पंथ को समर्पित हो गया। वे दिन-रात सिमरन में लीन रहते, जिससे तन को सेवा की प्रेरणा मिलती रही। दया, क्षमा, संतोष, सहज, प्रेम जैसे गुण उनके जीवन का अंग बन गये। उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित बाणी को सुना, समझा और केवल कंठस्थ ही नही किया, बल्कि संगत को समझाने की योग्यता भी प्राप्त कर ली। आपके विवाह-समारोह में श्री गुरु नानक साहिब के दोनों सुपुत्र भी सम्मिलित हुए थे। आपको चार सुपुत्रों की प्राप्ति हुई। विवाह के बाद भी बाबा बुड्ढा जी का मोह केवल सांसारिकता में न बंध कर गुरु-घर और परमात्मा के लिये समर्पण में निरंतर दृढ़ होता गया। परिवार में रह कर भी वे परमात्मा के थे। उन्हें तो स्वयं श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा के साथ जोड़ा था। कोई अन्य उन्हें परमात्मा से दूर नहीं कर सकता था— *''मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥''* बाबा बुड्ढा जी का समर्पण-भाव गुरसिक्ख की आदर्श अवस्था थी, जिसे कोई एक ही गुरु-कृपा से अर्जित कर पाता है। सहज अवस्था में कुछ होना या न होना, सम भाव से ग्रहण किया जाता है। बाबा बुड्ढा जी अपनी सम दृष्टि के कारण ब्रह्मज्ञानी बन गये। श्री गुरु नानक साहिब ने उन्हें सम्मान दिया। वे अधिक विनम्र और परिपक्व सेवक बने, बनते गये। उनका मन आध्यात्म के शिखर को छू रहा था तन निष्ठावान सेवक की तरह वाहिगुरु के चरणों की धूल बना हुआ था :

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥
वाजे बाझहु सिंङ्गी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ
जोग जुगति तउ पाईऐ ॥ *(पन्ना ७३०)*

संसार में विचरते हुए , परिवार में रहते हुए ,

समाज का अंग होते हुए कई तरह के कुविचारों, पापों और दुर्भावनाओं का सामना करना पड़ता है। इनमें रह कर इनसे बच पाना ऐसे ही है जैसे काजल की कोठरी से निष्कलंक निकल आना। जो ऐसा कर पाता है वही परमात्मा का सच्चा भक्त है। श्री गुरु नानक साहिब अपने सिक्ख को इसी मार्ग पर चलाना चाहते थे। बाबा बुड्ढा जी जैसे सिक्खों ने इसे कर दिखाया। रमदास के जंगल में उनकी सुरत गुरु नानक साहिब के चरणों में लगी तो जीवन भर नहीं टूटी। इसमें कभी कोई विघ्न नहीं आया और न यह कभी कम हुई। बारह वर्ष की अवस्था में श्री गुरु नानक साहिब की कृपा से उनके मन के अंदर व्याप्त मृत्यु का भय ही नहीं समाप्त हुआ बल्कि सांसारिक जीवन भी समाप्त हो गया और आध्यात्मिक जीवन आरंभ हुआ। उनकी आत्मिक भक्ति इतनी सहज और रची हुई थी जिसे देखने, समझने के लिये ख़ास अंतर्दृष्टि की आवश्यकता थी। उनकी भक्ति ऐसे थी जैसे बिना बजाये वीणा से धुन बजने लगे, मन में बिना किसी प्रयास के गुरबाणी का गायन चलने लगे और चलता रहे। बाबा बुड्ढा जी दिखने में सेवा करते लगते, मगर उनका मन उस समय भी परमात्मा के सिमरन में लगा होता था। इससे तन की सेवा मन के सिमरन का ही हिस्सा बन जाती थी। श्री गुरु नानक साहिब उनकी इस उच्च व आदर्श अंतर अवस्था को समझते थे। यही कारण था कि उन्होंने जब श्री गुरु अंगद साहिब को गुरुआई सौंपी तो गुरुता की सारी रस्में बाबा बुड्ढा जी से सम्पूर्ण करवायीं। यह आत्मिक भक्ति का इतना महान सम्मान था जो आज तक किसी अन्य को किसी भी धर्म में प्राप्त नहीं हुआ है। बाबा बुड्ढा जी ने आगे भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक गुरुता-रस्में पूरी करने की परंपरा का निर्वहन किया। इसके बाद उनके परिवार को यह सौभाग्य मिला। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को गुरुता पद पर विराजमान कराने संबंधी रस्में बाबा बुड्ढा जी के वंशज बाबा राम कुंवर जी ने निभायी थीं। बाबा बुड्ढा जी के ब्रह्मत्व का पुण्य उनके पूरे परिवार का उद्धार करने वाला सिद्ध हुआ। गुरबाणी में बार-बार उल्लेख मिलता है कि सच्ची भक्ति करने वाले का तो कल्याण होता ही है उसके कुल का भी हित सिद्ध हो जाता है।

श्री गुरु नानक साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद बाबा बुड्ढा जी की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती गई। जब भी सिक्ख पंथ में किसी भ्रम की स्थिति बनी बाबा बुड्ढा जी उद्धारक बन कर सामने आये। सिक्ख मात्र अपने लिये नहीं सोचता, उसकी दृष्टि पूरे समाज, पूरे संसार पर समान रूप से उदार और समृद्ध होती है। श्री गुरु अंगद साहिब को गुरुआई सौंपने के बाद श्री गुरु नानक साहिब ने उन्हें खडूर साहिब जाकर रहने का आदेश दिया। श्री गुरु अंगद साहिब खडूर साहिब आये तो परिस्थितियों को देखते हुए एक सिक्ख महिला माई सभराई के घर अज्ञातवास में चले गये। सिक्ख संगत उनके दर्शन करने को विह्वल हो रही थी। कई दिन ऐसे बीत गये। बाबा बुड्ढा जी ने अपने आत्म-बल से उनके निवास का पता लगा लिया और वहां जाकर उनसे गुप्तवास त्यागने का आग्रह किया। श्री गुरु अंगद साहिब बाहर आये और संगत को दर्शन दिए। श्री गुरु अमरदास साहिब जब गुरुआई पर आसीन हुए तो गोइंदवाल साहिब आ

गये। श्री गुरु अंगद साहिब के पुत्र दातू उनका गुरुआई पर विराजमान होना सहन नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने गोइंदवाल साहिब आकर अभद्र व्यवहार किया और गुरु-घर का काफी सामान समेट लिया। श्री गुरु अमरदास साहिब अपने जन्म-स्थान बासरके आ गये और एक कमरे में ध्यान लगा कर बैठ गये। उन्होंने किसी से भी मिलने से मना कर दिया। बाबा बुड्ढा जी ने ही उन्हें पुनः संगत के साथ जोड़ा। यह सम्मान एक सच्चा गुरु ही अपने सिक्ख को दे सकता है, और एक सच्चा सिक्ख ही इस महानता को प्राप्त करने के बाद भी विनम्र, सहज एवं निर्लेप रह सकता है, जैसा बाबा बुड्ढा जी ने सिद्ध कर दिखाया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब ग्वालियर के किले में कैद थे उस समय श्री हरिमंदर साहिब का सारा प्रबंध बाबा बुड्ढा जी ने ही संभाला था और सारी मर्यादा वैसे ही निर्विघ्न चलती रही थी जैसी गुरु साहिब के समय चला करती थी। ऐसा इसलिए संभव हो सका क्योंकि बाबा बुड्ढा जी गुरबाणी और गुरु साहिबान की शिक्षाओं के मर्म तक पहुंच उन्हें धारण कर चुके थे। कहते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी के समय जब अकबर उनके दर्शन करने आया था तो बाबा बुड्ढा जी ने ही उसे सिक्ख पंथ की दार्शनिक बारीकियों से अवगत कराया था। श्री गुरु अरजन साहिब ने जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना पूर्ण की तो बाबा बुड्ढा जी ही उसे सिर पर रख कर श्री हरिमंदर साहिब लाये थे और प्रथम प्रकाश करने व हुकमनामा लेने का सौभाग्य भी उन्हें ही मिला था। उनके लिये यह सेवा थी। इसके बाद जब वे श्री अमृतसर के निकट गुरु साहिब के खेतों में रह कर खेती और मवेशियों की देखभाल करते रहे उनकी अंतर अवस्था और भी प्रकाशित होती गई। इसे जानते हुए ही श्री गुरु अरजन साहिब ने अपनी सुपत्नी माता गंगा जी को सन्तान-प्राप्ति हेतु प्रभु-चरणों में अरदास करने के लिए बाबा जी के पास भेजा था। जो गुरु सारे संसार को अपनी दया, कृपा और उदारता से उपकृत कर रहा हो वह स्वयं अपने लिये अपने ही सिक्ख से याचना करवाये, यह सिक्ख धर्म दर्शन का ऐसा गूढ़ तत्व है जिसे समझना मानव बुद्धि के वश में नहीं है, बस, विस्मय ही होता है :

चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥

(पन्ना ३१९)

नाम जपने वाले की अंतर अवस्था निर्मल, विकारों से रहित और आनन्द से परिपूर्ण हो जाती है। उसके मन की शुद्ध भावनायें शिखर पर पहुँच जाती हैं और एक कौतुक जैसा प्रकट होता है। यह वाहिगुरु का रचा हुआ कौतुक है। यह आम मनुष्य को तो कौतुक लगता है किन्तु यह एक सत्य है जो पल-पल घटित होता रहता है। बाबा बुड्ढा जी का जीवन आज भले ही कौतुक जैसा लगता हो, किन्तु यह सत्य है। श्री गुरु नानक साहिब की रची आदर्श सिक्ख की अवधारणा पूर्ण सत्य थी, है और रहेगी, किन्तु हमें विस्मित करने वाली है।

बाबा बुड्ढा जी ने श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक गुरु-घर की सेवा की और ऐसा करने में वे इसलिए सफल रहे क्योंकि यह वाहिगुरु की रची हुई महिमा थी। वाहिगुरु सदैव अपने सिक्खों पर कृपा करता है।

सेवा और त्याग, बलिदान के जो उदाहरण सिक्खों ने प्रस्तुत किये वे अद्‌भुत थे। वाहिगुरु के प्रताप से ही— *''नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली॥''* जो स्वयं को दीन-हीन और सेवक समझता है वही अपने स्वामी, परमात्मा की दिखाई राह पर चल सकता है। बाबा बुड्ढा जी स्वयं को सदैव सेवक समझते रहे। उन्होंने जहां श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर के प्रथम ग्रंथी के रूप में सेवा निभाई वहीं अन्य कार्यों को भी सेवा जान करना अपना सौभाग्य समझा। कहा जाता है कि श्री अकाल तख्त साहिब का पूरा निर्माण दो ही सिक्खों— बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी ने किया था। जो सुख उन्हें गुरबाणी की व्याख्या करने में मिलता था वही सुख गुरु-घर के खेतों में घास-फसल काटने और मवेशियों की देखभाल में भी मिलता था। यह उनकी समदृष्टि का प्रमाण था। गुरबाणी में इसी समदृष्टि को ब्रह्मज्ञानी का गुण कहा गया है :

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान॥

(पन्ना २७२)

जब हवा बहती है तो एक समान बहती है। वह राजा और रंक, ज्ञानी और अज्ञानी, निर्बल और सबल, सभी को एक समान स्पर्श करती चलती है। वह कोई भेद नहीं करती कि किसी को अधिक सुख दे, किसी को कम। उसकी शीतलता सभी के लिये एक जैसी होती है। ऐसा ही ब्रह्मज्ञानी का व्यवहार है। वह हर स्थिति में सहज रहता है। हर किसी के साथ प्रेम और सहयोग की भावना से व्यवहार करता है। अपने आदर्शों को सदैव बनाये रखता है। वह अपने पुण्य कर्मों का कभी कोई प्रतिदान नहीं चाहता और सदैव परमात्मा के प्रेम में लीन रहता है— *''काहू फल की इछा नही बाछै॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै॥''* अपने पूरे जीवन काल में उन्होंने मात्र एक इच्छा प्रकट की थी वो भी जीवन के अंतिम पड़ाव पर। उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से प्रार्थना की थी कि जब उनका अंत समय निकट आये तो वे उनका (गुरु साहिब का) दर्शन करना चाहेंगे। इससे अधिक पावन और सहज भावना एक गुरसिक्ख की और क्या हो सकती है? उनके अंतिम समय में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब उनके पास रमदास गये थे जहां वे उस समय निवास कर रहे थे।

बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु नानक साहिब द्वारा लगाया गया गुरसिक्खी का वो वृक्ष थे जिसने समय पाकर सुंदर और विशाल आकार लिया और जिसकी छाँव में गुरमति के आदर्शों का भरपूर प्रसार हुआ। श्री गुरु अमरदास जी ने जब मंजिआं स्थापित कीं तो बाबा बुड्ढा जी को उन सभी के प्रबंध के समन्वय का दायित्व दिया था। उनका स्वयं का जीवन ही गुरसिक्खी के प्रचार का बड़ा स्रोत था। गुरु साहिबान ने गुरबाणी में सिक्ख पंथ के सिद्धांत स्थापित किये हैं। उन्हें जब बाबा बुड्ढा जी के जीवन से जोड़ कर समझने का यत्न किया जाये तो मर्म तक पहुंचना सरल हो जाता है। वे सदा वन्दनीय हैं— *''जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ॥''*

वीर शिरोमणि बाबा बंदा सिंघ बहादुर

-डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)

दशमेश पिता साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से आशीर्वाद प्राप्त कर पंजाब की धरती पर आगमन कर सिक्ख कौम के पहले राज्य- सत्ता हासिल करने वाले हुक्मरान अद्वितीय वीर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जिस लोक राज्य की स्थापना की उसमें सदियों से दबे-कुचले, हीनता बोध से दबे जनमानस ने पहली बार आज़ादी का आनंद अनुभव किया। उसने अपने विजित क्षेत्रों का अलग-अलग राज्य-प्रबंध दबे-कुचले दलित वीर बहादुरों को सौंपा। जनसाधारण को ही राज्य सुख अनुभव करने की जो योजना बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने निश्चित की वही आगे चल कर शक्तिशाली सिक्ख राज्य की स्थापना करने में सहायक सिद्ध हुई। जनगणना में सामाजिक राजनीतिक स्वतंत्रता का जो जज़्बा इस बहादुर हुक्मरान ने भरा वही आगे चलकर महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा गौरवशाली सिक्ख राज्य की स्थापना में चरितार्थ हुआ और यही आज़ादी का सुख भोगने की मानसिकता सन् १९४७ ई. में स्वतंत्र भारत के निर्माण में सहायक सिद्ध हुई।

इस वीर बहादुर का जन्म १६ अक्तूबर, १६७० ई. में प्राकृतिक सुषमा से संपन्न कश्मीर के पुंछ जिले के एक छोटे-से गांव के रामदेव भारद्वाज राजपूत के गृह में हुआ। पिता ने नाम दिया—लछमण देव। साधारण कृषि-कर्म करने के साथ- साथ इन्हें शिकार खेलने का भी शौक था। एक बार इनके तीर के प्रहार से एक हिरणी का शिकार हुआ जिसके गर्भ में दो बच्चे थे। उन दोनों बच्चों ने तड़पते हुए प्राण त्यागे। यह देख लछमण देव अत्यंत दुखी हुए। इतने सर्वेदित हुए कि इन्होंने शिकार करना ही छोड़ दिया और साधु पंडितों के साथ भ्रमण करने लगे। इसी संदर्भ में इनका मेल तांत्रिक औघड़ नाथ से हुआ जो तंत्र-मंत्र-विद्या का माहिर था। औघड़ नाथ की सेवा में रहकर इन्होंने भी तंत्र-विद्या में मुहारत हासिल की। लोक-प्रसिद्धि बढ़ जाने पर इन्होंने दक्षिण-भारत नांदेड़ में गोदावरी नदी के किनारे अपना डेरा कायम कर लिया और माधोदास वैरागी नाम से प्रसिद्ध हुए। जब सन् १७०८ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ पहुंचे तो इनकी प्रसिद्धि से परिचित हो सबसे पहले इन्हीं के डेरे में पहुंचे तब ये डेरे में नहीं थे। जैसे ही डेरे में आये तो अपनी खाट पर गुरु साहिब को बैठा पाकर क्रोधित हो अपनी तंत्र-विद्या के अभ्यास अनुसार खाट उलटाने की कोशिश की, पर इसकी तंत्र-विद्या कामयाब नहीं हुई। तब गौर से गुरु साहिब के तेजस्वी मुख-

मंडल को देख समझ गया कि यही तेजस्वी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं। चरणों पर गिर क्षमा मांगी, बोले, मैं आपका बंदा हूं। गुरु साहिब ने प्यार से कहा, बंदा है तो बंदों वाले काम कर। अपनी अंत: शक्तियों का व्यर्थ प्रयोग मत कर। अपनी शक्ति पंजाब में से जुल्म का नाश करने में लगाओ। भाई दया सिंघ जी ने माधोदास को सिक्खी स्वरूप के लिए तैयार किया। उसे खंडे-बाटे की पाहुल छका वैरागी से सिंघ तैयार कर दिया। अपने भत्थे से पांच तीर, निशान साहिब और पांच सिंघ— भाई दया सिंघ, भाई रण सिंघ, भाई कान्ह सिंघ, भाई बिनोद सिंघ और भाई बाज सिंघ प्रमुख सिंघों सहित २० बहादुर सिंघ और देकर पंजाब की ओर रवाना किया। पांच प्रमुख सिंघ पंथ प्रधानों को शिक्षा और गुरमति विचारधारा से परिचित कराते रहने के लिए साथ रवाना किए।

बाबा बंदा सिंघ ने पंजाब में पहुंचते ही माझा, मालवा और दोआबा के सिंघों को अपने विश्वास में लिया। भरतपुर के एक धनी व्यक्ति ने दसवंध का धन देकर मदद की। फिर लुबाणे सिंघों-व्यापारियों का एक जत्था मिला। उन्होंने गुरु के नाम पर धन की मदद दी जो बाबा बंदा सिंघ बहादुर के बहुत काम आई। बांगर इलाके के खरखोदा नामक स्थान पर पहुंच कर उन्होंने पंजाब के सभी क्षेत्रों के प्रमुख सिंघों को पत्र भेज उन्हें सूचित किया कि उन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा पंजाब में से जुल्म का नाश करने और वजीर खान को सबक सिखाने के लिए भेजा गया है। सिंघ तो पहले से ही छोटे साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी को दिए गए ज़ालिमाना कष्टों से परेशान थे। उनका खून खौल रहा था। संदेश पाकर वे सब तन, मन, धन से सहयोग देने को तैयार हो गए। मुसलमान लेखक काज़ी खान और मुहम्मद कासिम के अनुसार पंजाब की ओर बढ़ते बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ ४००० घुड़सवार और ७८०० पैदल सिपाही आ मिले। गोकुल चंद नारंग के अनुसार देखते ही देखते बाबा बंदा सिंघ बहादुर के सैनिकों की संख्या ४०००० तक जा पहुंची। सबसे पहले दिल्ली की सीमा लांघते ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सोनीपत और कैथल को अपने कब्जे में कर लिया और अब अगला निशाना समाणा था।

समाणा शहर विशेष स्थान रखता था। एक तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को जिन ज़ालिम जल्लादों ने शहीद किया था वे समाणा के ही निवासी थे। छोटे साहिबजादों को शहीद करने वाले— शाशल बेग और बाशल बेग भी यहीं के थे। एक तरह से यह जल्लादों का प्रसिद्ध शहर था जो कभी विद्वानों का केंद्र कहा जाता था। प्रसिद्ध मुसलमान दरवेश भीखन शाह यहीं के थे पर अब समय बदल चुका था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इस शहर को अपना निशाना बनाया। यहां धनाढ्य सैयद रहते थे, जो जनता पर जुल्म कर सत्ता से इनाम प्राप्त करते थे और ऐशपरस्त थे। उन्हें एहसास भी नहीं था कि सिक्खों की तुच्छ शक्ति उनका नाश कर सकती है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फौज ने बिजली की फुरती से

अचानक आ हमला किया। सैयद पठान और मुगलों को संभलने का मौका ही नहीं मिला, जिसे जहां राह मिली अपनी जान बचा कर भागा। अब दूसरा निशाना साढौरा था। सढौरा पीर बुद्धू शाह का स्थान था। हुकूमत के सताए निवासियों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर का पूरा साथ दिया। हमला कर साढौरा को अपने कब्जे में किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर योजनाबद्ध तरीके से चल रहे थे। अब उनका मुख्य निशाना सरहिंद जीतना और वजीर खान को मारना था। काफिला बढ़ता ही जा रहा था। सरहिंद, दिल्ली और लाहौर के बीच एक शक्तिशाली मुगल केंद्र था। पंजाब वासियों को लताड़ने की सभी योजनाएं यहीं से वज़ीर खान के नेतृत्व में बनती थी। यहां जुल्म की इंतहा थी। यहां तक कि सात और नौ वर्ष के गुरु साहिब के छोटे साहिबजादों पर भी तरस नहीं किया गया था। पूरे पंजाबी समाज में आक्रोश था। वे उबल रहे थे। जैसे ही बाबा बंदा सिंघ की सफलताओं ने उत्साह दिया वे उत्साह से आगे बढ़े। इधर मुगल हाकिमों की पूरी कोशिश इस सैलाब को रोकने की रही। वज़ीर खान ने युद्ध की भरपूर तैयारी कर ली। उसके अपने पास १५ हज़ार तनखाहदार सिपाही थे। उसने गाजियों को इसलाम का वास्ता दे जिहाद के लिए ३५-४० हज़ार फौज इकट्ठी कर ली। उसके पास बहुत-से हाथी, घोड़े और ५७ तोपें भी थीं। बाबा जी ने भी अपने १० हज़ार सिंघों की योजनाबंदी की। १२ मई, सन् १७१० ई. को खालसई फौज ने सरहिंद से कुछ दूर चप्पड़चिड़ी के खुले मैदान में डेरा डाला। इस मैदान में दरमियाने कद के बहुत से वृक्ष थे और एक पानी का तालाब व एक टीला भी था। यह सारा माहौल खूब फायदेमंद रहा। बाबा जी ने अपनी फौज को चार हिस्सों में बांटा। दाहिनी ओर गाज़ियों के सामने भाई बाज सिंघ की कमान में माझा और दोआबा क्षेत्र के सिंघ रखे। बायीं ओर मलेरकोटियों के सामने भाई फतहि सिंघ की अगुआई में मालवा के सिंघों को तैनात किया। तीसरे हिस्से में पंजाब के अन्य क्षेत्रों से आए हुए सिंघ रखे और उनके मध्य भाई कान्ह सिंघ को तैनात किया। चौथे हिस्से में एक हज़ार जोर बहादुर सिंघों का जत्था अतिरिक्त रोल के रूप में रखा जो संकट गहराने पर आपात काल के लिए था। बाबा जी स्वयं टीले पर स्थित हुए। वज़ीर खान ने अपनी सारी सेना और तोपों के मुंह एक ही दिशा— सामने की ओर रखे थे। सिंघों ने युद्ध से पहली रात जैकारे गुंजाते हुए वज़ीर खान को डराने के लिए छोटे- मोटे हमले किए, जिससे अफरा-तफरी में वजीर खान की सेना थक-हार गई। प्रातः होते ही सिंघों ने हल्ला बोल दिया। दुश्मन फौज अभी तैयार नहीं थी। घबराहट में उन्होंने गोले दागने शुरू किए जो पेड़ों पर ही अटक कर रह गए। आधा बारूद तो यूं ही नाकाम हो गया। बाकी की तोपें सिंघों ने हल्ला बोल अपने कब्जे में कर लीं। अब सिंघों ने सीधा हमला किया। बीच में कुछ डावांडोल की स्थिति भी बनी, पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर को कलगीधर पिता पर पूरा विश्वास था। वे उनका बख़्शा हुआ

तीर चला हाथी पर सवार हो सीधे वज़ीर खान के पास पहुंचे। वज़ीर खान की फौज में भय व्याप्त हो गया— 'बंदा आ गया, बंदा आ गया' कहते वे भागने लगे। वज़ीर खान का पुत्र समुद खान और सिपहसालार अब्दुल समद मारे गए। इसी बीच भाई फतहि सिंघ ने घोड़े पर खड़े होकर हाथी पर बैठे वज़ीर खान का सिर कृपाण के एक ही वार से काट अलग कर दिया। वज़ीर खान के मरते ही मुगलों की फौज भाग खड़ी हुई। विजय सिंघों के हाथ लगी। एक दिन में ही सरहिंद पर विजय सिंघों को प्राप्त हुई।

अगले दिन आराम कर १४ मई, सन् १७१० को खालसई फौज ने सरहिंद में प्रवेश किया। सुच्चा नंद और अन्य दुष्टों को सज़ा दी गई। वज़ीर खान के महल की ईंट से ईंट बजाई गई। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के हुक्म से किसी धार्मिक स्थान को नुकसान नहीं पहुंचाया गया। किसी स्त्री का अपमान नहीं किया गया। किसी की पगड़ी पर हाथ नहीं डाला गया। केवल उन्हीं अफसरों व अहुदेदारों के घर-महल तबाह किए गए जिन्होंने छोटे साहिबजादों की शहादत में सहयोग दिया था और जो गुरु के सिक्खों के खिलाफ थे। इसके बाद बाबा बंदा सिंघ ने और भी कई क्षेत्रों को जीता। मुखलिसगढ़ के किले को जीत कर उसका नाम लोहगढ़ रखा और इसे अपनी राजधानी बनाया। सिक्ख राज्य की नींव रखी गई। अन्य विजित क्षेत्रों पर जाटों, दलितों, निम्न वर्ग के योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया गया। सरहिंद का राज्यपाल भाई बाज सिंघ को बनाया गया। समाणा का राज्यपाल भाई फतहि सिंघ तथा थानेसर का राज्यपाल भाई राम सिंघ को बनाया गया। भाई आली सिंघ को भाई बाज सिंघ की सहायता के लिए नायब राज्यपाल नियुक्त किया। अन्य अहुदों पर ईमानदार सिंघ योद्धाओं को नियुक्त किया गया। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्के जारी किए गए। सिक्ख राज्य की मुहर तैयार की गई, जिस पर लिखा था-- *''देगो तेगो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग, याफत अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ''* अर्थात् मुझे देग तेग फतह और सफलता श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुई है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर पूर्णत: गुरु-आशय को समर्पित थे। उन्हें गुरु-शिक्षा पर पूर्ण आस्था थी। वे अपने साथियों को भी पूरे रहितवान और गुरु-मर्यादा अनुसारी जीवन-यापन की प्रेरणा देते थे। उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं रखा। पंजाब में उन्होंने जो इलाके जीते वहां की जमीन खेतीकार वाहकों को दे दी और जालिम जमींदारी प्रथा के विरोध के बावजूद कृषक धर्म की बहाली की। खेतीकार किसान ही ज़मीन का मालिक है। साधारण किसानों को ज़मीन के मालिक बना कर उन्होंने गरीब दलितों को सरदारियां प्रदान की, जिसकी आधारशिला पर ही आगे चलकर मिसलें कायम हुईं और महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में मज़बूत सिक्ख राज्य की स्थापना हुई। सरहिंद और लाहौर शक्तिशाली केंद्रों को सिक्खों के अधीन कर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्खों को

इतना शक्तिशाली बना दिया कि अब मुगलिया सेना सिक्खों पर जुल्म करने से पहले दस बार सोचती। सिक्ख राज्य का सिक्का और सिक्ख राज्य का झंडा झूलता ही रहता था, पर अफसोस है कि भारत के जनसमूह में चेतना और सहयोग का अभाव रहा। सिक्खों की अपनी ताकत मुगलों के मुकाबले में कुछ भी नहीं थी और आम हिंदू राजाओं ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर का साथ नहीं दिया। सिंघ अत्यंत बहादुरी से मुगलों का सामना करते रहे। अंत में गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में मुगलों ने बाबा जी को घेर लिया। आठ महीने कच्ची गढ़ी को घेरा पड़ा रहा। सिंघ मुकाबला करते रहे। बाबा बिनोद सिंघ कुछ सिंघों सहित किला छोड़कर चले गए। अंत में मुगल कमांडर समद खान के शांतिपूर्ण चले जाने का वादा करने पर बाबा जी ने गढ़ी का द्वार खोल दिया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को ७०० साथियों सहित १७ दिसंबर, १७१५ ई. को घेर कर दिल्ली भेज दिया, गया जहां मुगल बादशाह फरुखसियर के आदेश पर सिंघों के रोज़ छोटे-छोटे दल बनाकर उन्हें शहीद किया जाता। अंत में बाबा जी को अति जालिमाना ढंग से शहीद किया गया। पहले उनके चार वर्ष के पुत्र का कलेजा निकाल कर उनके मुंह में ठूंसा गया फिर उनके शरीर को जमूरों से नोच-नोच कर अत्यंत कष्टदायी ढंग से उन्हें शहीद किया गया। इतिहास गवाह है और तत्कालीन इतिहासकार इस बात का जिक्र करते हैं कि सात सौ सिंघों में से एक भी आपनी आस्था से डोला डिगा नहीं। देखने वाले तो वहि वहि करते पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक भी सिंघ हताश नहीं हुआ। गुरु-मिशन पर पहरा देते हुए सिक्खी सिदक पर अडिग रह कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की जय जयकार और फतह के झंडे गाढ़ते हुए शहीद होते रहे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर सुयोग्य प्रबंधक, किसानी राज्य सत्ता-स्थापि के प्रतीक, इंकलाबी चेतना से भरपूर, निपुण नीतिवान, मानवीय स्वतंत्रता के संचालक थे, जिन्होंने मुगल सत्ता के अत्याचार, धक्केशाही एवं जुल्म का डट कर विरोध किया और आम मानस में आज़ादी व स्वतंत्रता की मिसाल प्रज्वलित की।

अफसोस है कि बाबा जी का कुछ संकीर्णवादी इतिहासकारों ने सही मूल्यांकन नहीं किया। उन पर तरह-तरह के लांछन लगाए कि वे गुरमति के विरोधी थे। उन्होंने कब्रें खुदवाईं, योगी-वैरागी होते हुए विवाह किया आदि कई दूषण (दोष) उन पर लगाए गए। वास्तविक्ता यह है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ऐसा कुछ नहीं किया जो गुरमति विरोधी हो। विवाह करना कोई दोष नहीं है। सिक्ख मत गृहस्थ जीवन को मान्यता देता है। उन्होंने अन्य धर्मों का बराबर सम्मान किया। वे इसलाम धर्म के विरोधी नहीं थे। उन्होंने केवल बीबी अनूप कौर की कब्र खुदवाकर इस अमृतधारी बीबी का सिक्ख धर्म के अनुसार दाह संस्कार करवाया। वे उन सभी तथ्यों से बहुत ऊपर, महान, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के स्वामी थे, जिन्हें उनके विरुद्ध बताया गया है।

सिक्खी सिदक की चरम सीमा को छूने वाले भाई तारू सिंह जी शहीद

*-स. सुरिंदर सिंह निमाणा**

सिक्ख समुदाय को अपने शहीदों की व्यापक परंपरा पर गर्व है। विदेशी मूल वाले अत्यंत अत्याचारी मुगल शासकों के जुल्म, अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस रखने के कारण सिक्ख पंथ के संस्थापक एवं पंचम नानक गुरु साहिबान द्वारा शुरू की गई शहीदी परंपरा को, उनके उपदेश को अपनाने वाले गुरु के सिदकी सिक्खों ने आगे बढ़ाया। सिक्ख समुदाय में हक, सच की खातिर तत्कालीन शासकों के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाइयों में अनगिनत सिक्ख शूरवीरों ने जुल्मी दुश्मन सेनाओं के विरुद्ध लड़ते हुए शहादत के जाम पीये। मुगल हुकूमत उनको शारीरिक रूप से खत्म कर हक, सच की आवाज़ उठाने वाली सिक्ख लहर को मिटाने की झूठी आशा पाले बैठी थी। अनेक सिक्ख शहीदों की लंबी विरासत में भाई तारू सिंह जी का नाम बहुत श्रद्धा व सत्कार के साथ लिया जाता है।

भाई तारू सिंह जी जिला तरनतारन के गांव पूहला के रहने वाले थे। आप अल्प आयु के थे जब आपके सिर से पिता का साया उठ गया। आपकी एक बहन थी। आपकी माता धर्मपरायण गुरसिक्ख महिला थी। माता ने अपने सुपुत्र के हृदय में सिक्ख धर्म के उसूल पूर्णत: भर दिये। सुपुत्र का जीवन माता द्वारा दृढ़ करायें गुरसिक्खी सांचे में ढल गया। आप खेती किरत द्वारा अपने परिवार की गुजर आवश्यकताओं की पूर्ति करने लग गए। माता व बहन के परस्पर सहयोग से भाई तारू सिंह जी उन सिंघों को भोजन पहुंचाकर आते जो समय की हुकूमत द्वारा फैलाई दहशत के कारण घर से बेघर हो चुके थे।

अठारहवीं सदी में सिक्खों पर दमन-चक्र बाबा बंदा सिंह बहादुर की शहीदी के बाद बहुत बढ़ चुका था। अपने घर आने वाले सिंघों को भोजन छकाकर भाई तारू सिंह जी का परिवार संतुष्टि प्राप्त करता। भाई साहिब की गुरसिक्ख मां और बहन अनाज पीस कर आटा तैयार करतीं। यह बात वर्णनयोग्य है कि उस ज़माने आटा अधिकतर हाथ द्वारा चक्की चलाकर बनाया जाता था जो कि कड़ी मेहनत का काम था। धन्य थीं उस युग की माताएं-बहनें, जो हाथ से चक्की चलाकर, आटा पीसकर अपने परिवार के सदस्यों को ही नहीं बल्कि मेहमानों को भी रोटी तैयार करके सहर्ष छकाकर संतुष्टि महसूस करती थीं। समय के चक्र में पड़कर हमारे सभ्याचार व जनजीवन का आदर्श मेहमाननिवाजी आज दुर्लभ हो चुकी है। ऐसी स्थिति देखकर इस युग की माताओं-बहनों के सिदक की दाद देनी बनती है।

इस परिवार की मेहमाननिवाजी व सेवा की इलाके में चर्चा थी। भाई जी की सेवा-भावना का यश दूर-दूर तक फैल चुका था। दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनका स्वभाव बुरे काम करना होता है। वे भले पुरुषों की शोभा सुनकर सहन नहीं कर पाते। उनसे ईर्ष्या वश वैर कमाते हैं। ऐसे लोगों की शृंखला में जंडियाला गुरु का हरिभगत निरंजनिया सरकारी मुखबरी करता हुआ अपने नीच स्वार्थों की पूर्ति कर रहा था। उसने लाहौर दरबार में जाकर सूबेदार जकरिया खान के समक्ष भाई साहिब के खिलाफ उकसाने वाले मनोभाव से कई बातें अपने पास से ही जोड़ कर कह दीं। उदाहरणस्वरूप

** ५, हंसली क्वार्टर्स, न्यू तहसीलपुरा, श्री अमृतसर— १४३००१ फोन : ८८७२७-३५१११*

तारू सिंघ बागियों को पनाह देता है, चोरियां करवाता है। ये दोष चंद्रमा पर थूकने जैसी बात थी। सरासर मनघड़त दोष। वह दौर ही ऐसी अराजकता व अफरातफरी का था जिसमें हाकिम दोषों की तह तक जांच हेतु जाना ही नहीं चाहते थे। वैसे भी सूबेदार जकरिया खान ने तो सिक्खों का सर्वनाश करने के बुरे इरादे पाल रखे थे।

सूचना पाना ही काफी था राजकीय कार्यवाही के लिए। जकरिया खान ने बीस-पच्चीस सिपाही मोमन खान के नेतृत्व में भाई जी की गिरफ्तारी के लिए तत्काल ही हरिभगत निरंजनिये के साथ रवाना कर दिए। 'प्राचीन पंथ प्रकाश' में लिखे अनुसार, भड़ाना नामक गांव के सिक्खों ने सिपाहियों पर सामूहिक आक्रमण कर उनसे भाई जी को छुड़ाने की भी योजना बनाई। इस खबर का भाई तारू सिंघ जी को पता चल जाने पर उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया, क्योंकि ऐसा करने की स्थिति में गांव पर दमन-चक्र चलना तय था। उस समय भाई जी ने कहा कि गुरु जी ने तो हमारे लिए सरवंश कुर्बान कर दिया था और मैं उनका सिक्ख होकर मरने से डरूं! मैं मर जाऊं तो क्या हुआ, शेष लोग सलामत रहें।

भाई जी को लाहौर लाया गया। उनको कई दिन लाहौर के कारावास में रखा गया। इसी समय दौरान भाई महिताब सिंघ मीरांकोटिया अपने गांव आने तथा इसकी मुखबरी मिल जाने के कारण हुकूमत के हाथ लग गए। भाई महिताब सिंघ को भाई तारू सिंघ जी की आंखों के सामने चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद किया गया कि शायद भाई जी इस मृत्यु-ढंग से खौफ खाकर हार मान लें, परंतु भाई जी अडिग रहे। यह भी लिखा मिलता है कि भाई जी को चरखड़ी पर चढ़ा कर घुमाया गया। आपकी हड्डियां-पसलियां टूट गईं, परंतु आप गुरु-कृपा से चढ़दी कला में रहे। नवाब जकरिया खान ने आपको अपने इरादे से गिराने हेतु सभी प्रयत्न करके देख लिए— धन, वैभव, सुंदर स्त्रियों से निकाह आदि। भाई जी ने नवाब को हुकूमती अत्याचार व घोर अन्याय का सच उसके मुंह पर सुनाने का साहस दिखलाया। नवाब ने जब भाई जी को जबरन मुसलमान बनाने की गीदड़ धमकी दी तो आपने सीधे स्पष्ट लफ्ज़ों में उसे बतला दिया कि कलगीधर पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा प्रदत्त सिक्खी को ऐसी धमकियों से कोई खतरा नहीं। मैं गुरु की कृपा से अपना सिक्ख धर्म केशों-श्वासों सहित निभाऊंगा। नवाब क्रोध की सभी सीमाएं पार कर गया। कहने लगा कि मैं तेरी खोपड़ी को केशों सहित उतरवा दूंगा। जल्लाद ने भाई साहिब की खोपड़ी खुरपे से केशों सहित उतार दी। आपने इस स्थिति में अपना चित्त नाम सिमरन में जोड़े रखा। मुख से उफ तक न कहकर अपना सिक्खी सिदक निभा गए। जकरिया खान ऐसी स्थिति में भाई जी को अडोल देखकर हैरान परेशान हो उठा। उसने भाई जी को लाहौर के दिल्ली दरवाज़े के बाहर स्थित धर्मशाला में भिजवा दिया। वहां १ सावन, १८०२ बिक्रमी को भाई जी शरीर छोड़ गए। ऐसी अडोलता, ऐसा सिक्खी सिदक दिखला गए जो हमारे लिए अनंत काल तक अडोलता व दृढ़ता के गुणों का संचार करने के लिए प्रेरणा-स्रोत बना रहेगा।

यह घटना गहरा आत्मविश्लेषण मांगती है समस्त नानक-नाम लेवा सिक्ख पंथ से कि देखो! भाई तारू सिंघ जी ने केशों सहित खोपरी उतरवानी मंजूर कर ली, लेकिन एक-मात्र भी केश कटवाना स्वीकार नहीं किया। परंतु आज हम कहां चले गए? हम तो अपने केश कटवा सुंदर सिक्खी स्वरूप स्वयं ही बिगाड़ने के रास्ते पर चल पड़े। गुरु हमारी मदद करे!

सहायक सामग्री : *'गुरमति प्रकाश', जुलाई २००५, लेख : सिक्खी केस अमोलक याहै, कृत स. प्रेमजीत सिंघ।*

महाराजा रणजीत सिंघ का दरबार-ए-खालसा अर्थात् खालसा दरबार

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक उद्घोष बड़ा प्रसिद्ध है— *''चिड़ियों से मैं बाज़ लड़ाऊं. . . सवा लाख से एक लड़ाऊं . . . तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊँ. . .''* अर्थात् मैं चिड़ियों (निर्बल, पीड़ित लोग) को इतना शक्तिशाली बना दूंगा कि वे बाज़ (बलशाली, ज़ालिम, आततायी लोग) को मार सकें। एक-एक को इतना बहादुर बना दूंगा कि वे अकेले सवा-सवा लाख से टक्कर ले सकें। तभी मैं अपना नाम 'गोबिंद सिंघ' कहलाऊंगा। इसी लिए दशमेश पिता ने सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सृजना कर शोषित-पीड़ित मानवता को प्रबल सैन्य शक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया।

वैसे छठम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने स्वयं मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण कर सिक्खों को शस्त्रधारी बना दिया था, परंतु दशमेश पिता के काल में सिक्खों के सैन्यीकरण की प्रक्रिया अपने चरम पर जा पहुंची। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब नगर को सिक्खों के सैन्य एवं राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित किया। गुरु जी ने यहां अनंदगढ़, केसगढ़, होलगढ़ आदि पांच किलों का निर्माण कराया। खालसा पंथ की सृजना के साथ ही सिक्खों के सैन्यीकरण का पहला दौर सम्पन्न हुआ।

दशमेश पिता चाहते थे कि सिक्खों में वीर रसात्मक उल्लास एवं मानवता की रक्षा की प्रेरणा का भाव सदैव बना रहे। अत: गुरु जी ने सिक्खों के व्यवस्थित सैनिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया। इसी सिलसिले में दशमेश पिता ने फागुन माह की पूर्णिमा वाले दिन रंगों से भरी होली खेलने के स्थान पर पूर्णिमा से अगले दिन श्री अनंदपुर साहिब में वीर रसात्मक खेलों और करतबों से भरपूर 'होला महल्ला' मनाने का निर्देश दिया।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता की रक्षा हेतु जो संघर्ष आरंभ किया था उसे बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने आगे बढ़ाया। अठारहवीं सदी के महान सिक्ख योद्धाओं ने अपने आत्मबलिदान से इसे समृद्ध किया और अंतत: यह आंदोलन महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा पंजाब में खालसा राज्य की स्थापना के साथ पूर्णता को प्राप्त हुआ।

लाहौर में सिक्ख राज्य की स्थापना :

महाराजा रणजीत सिंघ अद्‌भुत सेनानायक और संगठनकर्ता के रूप में उभरे। सन् १७९२ से १७९८ तक महाराजा ने केवल १८ साल की आयु में ही समस्त सिक्ख मिसलों को एक सूत्र में पिरो दिया। फिर अफगान शासक शाह जमान को शिकस्त देते हुए सन् १८०१ ईस्वी के अंत तक लाहौर में स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना कर दी। इसके बाद महाराजा ने पेशावर, मुलतान, कांगड़ा, कश्मीर और अन्य इलाकों को जीत कर विशाल व मजबूत

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

सिक्ख राज्य स्थापित कर दिया।

महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित सिक्ख राज्य लोकतांत्रिक एवं धर्म-सद्भाव की भावना से प्रेरित राज्य था। प्रजा ही नहीं, बड़े अधिकारियों के स्तर पर भी सर्वधर्म सद्भाव के अद्भुत उदाहरण मिलते हैं। महाराजा का मंत्री फकीर अजीजुद्दीन मुस्लिम था। डोगरा राजा ध्यान सिंह प्रधानमंत्री था। इतालवी ईसाई वैंतुरा प्रधान सेनापति था। ब्राह्मण खुशहाल चंद भी उच्च पदस्थ अधिकारी था। यही नहीं, सरदार शाम सिंघ अटारी, सरदार हरी सिंघ नलवा, गौस खान, अकाली फूला सिंघ, दीवान मोहकम चंद आदि अनेक हिंदू, सिक्ख, मुसलमान, इतालवी-फ्रांसीसी आदि कई यूरोपियन भी महाराजा के दरबार में कार्यरत थे।

शासन व्यवस्था के पूर्णत : धर्म निरपेक्ष होने के बावजूद महाराजा रणजीत सिंघ 'खालसा' को सर्वोच्च शक्ति मानते थे। उन्होंने अपनी मिसल शुकरचक्किया के नाम पर राज्य नहीं किया बल्कि 'खालसा' के नाम पर शासन चलाया। महाराजा अपनी सरकार को 'सरकार-ए-खालसा' कहते थे और स्वयं को 'सिंघ साहिब' कहलवाना पसंद करते थे। महाराजा द्वारा चलाये गये सिक्के 'नानकशाही' और 'गोबिंदशाही' कहलाते थे। सिक्कों और मोहरों पर अंकित रहता :

अकाल पुरख जी सहाइ।
देगो तेगो फ़तह नुसरत बेदरंग
याफ़तज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ

यही नहीं, महाराजा अपने दरबार को 'दरबार-ए-खालसा' या 'खालसा दरबार' कहते थे।

दशहरे पर खालसा दरबार का आयोजन : बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक दशहरा पर्व भारतीय संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में वैसे तो सभी पर्व बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाये जाते थे परंतु महाराजा ने दशहरे को बिलकुल ही नया अंदाज़ दे दिया। जिस प्रकार दशमेश पिता ने होली को होला महल्ला को वीर रसात्मक रूप दिया था, उसी से सीख लेते हुए महाराजा ने दशहरे को शस्त्र-पूजा और वीर रसात्मक खेलों का पर्व बना दिया।

श्री अमृतसर साहिब में महाराजा ने एक किला बनवाया था— गोबिंदगढ़। इसी गोबिंदगढ़ किले में दशहरे वाले दिन एक बड़े 'खालसा दरबार' का आयोजन होता। पहले शस्त्र-पूजा की जाती, फिर सिक्ख योद्धा अपने जंगी कारनामों का जबरदस्त प्रदर्शन करते। बहादुर सिक्ख सैनिकों में घुड़सवारी, नेजेबाज़ी, तलवारबाजी, तीरंदाज़ी, निशानेबाजी, गोलंदाजी जैसे युद्ध कौशलों की हैरतअंगेज़ प्रतियोगिताएं करवाई जाती। विजेताओं को बड़े-बड़े पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता। उन्हें सेना में ऊँचे ओहदों पर तरक्की दी जाती। नये लोग भी इस आयोजन में अपने युद्ध-कौशल का प्रदर्शन करते तथा बदले में खालसा सरकार की कृपा प्राप्त करते और खालसा सेना में उल्लेखनीय पद प्राप्त करते।

इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंघ ने दशहरा पर्व को विलक्षण आयोजन में बदल दिया। महाराजा ने दशहरे को उसकी मूल प्रवृत्ति के अनुरूप वीर रसात्मक और युद्ध-कौशल त्योंहार के रूप में परिवर्तित कर दिया। आज भी सिक्ख परंपरा में दशहरा पर्व को 'खालसा दरबार' पर्व के रूप में आयोजित किया जाता है।

लालटेन और आरसी

-डॉ. जसवंत सिंघ नेकी (दिवंगत)

साधु राघवानंद जी लगभग ७०-७५ साल के थे। आयु चाहे बड़ी थी, मगर शरीर तगड़ा और सेहतमंद था। केवल दूध और कुछ फलों पर ही गुज़ारा करते थे। अन्न आदि और कुछ भी नहीं खाते थे।

वे कई बार हमारे घर मेरे दादा जी के साथ आध्यात्मिक वार्तालाप करने आ जाया करते थे। उनकी सारी जायदाद धोती-कुर्ता और एक कमंडल था। सोते भी जमीन पर ही थे। बड़े तपस्वी थे।

एक दिन वे आए तो दादा जी घर पर नहीं थे। मैं घर पर था। मैंने उनको अंदर बिठाया और बताया कि दादा जी जल्दी ही आ जाएंगे, गुरुद्वारे माथा टेकने गए हैं। जब हम दोनों थे तो मैंने साधु जी से पूछा, ''अंदर ज्योति कैसे जलती है?'' कहने लगे, ''दो तरह से। एक लालटेन के द्वारा और दूसरी आरसी के द्वारा।''

मैंने कहा, ''आपकी बात मेरी समझ में नहीं आई।'' कहने लगे, ''लालटेन का तात्पर्य है कि किसी के अंदर स्वाभाविक रूप से प्रकाश हो जाये। यह परमात्मा की कृपा से किसी को भी किसी समय भी हो सकता है। आरसी का तात्पर्य, जैसे किसी को आरसी में अपना मुंह दिखाई देता है, उसी तरह उसे उसके अंदर ज्योति का दीदार करवाना। यह गुरु करवाता है। पहले उसे अंदर की ज्योति की तरफ से आगाह करता है, और फिर उस ज्योति के दर्शन का साधन बताता है।''

अभी हमारी इतनी ही बात हुई थी कि दादा जी आ गए और मैं दोनों को परस्पर विचार-विमर्श के लिए छोड़ कर बाहर आ गया।

साधु जी के साथ मेरी जो वार्ता हुई उसके बारे में मैंने बाद में अपने दादा जी को बताया और कहा कि ''मेरी जिज्ञासा अधूरी रह गई, क्योंकि आप आ गए और मैंने आपको साधु जी के पास अकेले छोड़ जाना उचित समझा।''

दादा जी मुस्कराए और कहने लगे, ''इस तरह समझ कि श्री गुरु नानक साहिब के अंदर परमात्मा ने खुद ज्योति जलाई, जब वेईं वाली घटना के समय वे आलोप हुए थे। श्री गुरु अंगद साहिब में ज्योति श्री गुरु नानक साहिब ने जलाई। पहली ज्योति सीधी लालटेन की ज्योति जैसी थी। चाहे इसकी रौशनी लालटेन जैसी नहीं, मगर कई सूर्यों जैसी होती है। यह ज्योति मौजूद तो सबके अंदर है, परंतु कर्मों के नीचे ढकी होती है। उसे कोई देख नहीं सकता। गुरु जी अपनी नदरे-कर्म से जिज्ञासु को उसकी झलक दिखा सकते हैं, खुद उसकी आरसी बन कर। जिज्ञासु यह तभी देख सकता है, अगर गुरु के आगे आत्मसमर्पण कर दे।

(पुस्तक 'जिन्हां दिसंदड़िआं दुरमति वंञै' में से धन्यवाद सहित)

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १३२

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

सु सबद का कहा वासु कथीअले
जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥
त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ
तिसु कहु कवनु अधारो ॥
बोलै खेलै असथिरु होवै
किउ करि अलखु लखाए ॥
सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै
अपणे मन समझाए ॥
गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै
करि नदरी मेलि मिलाए ॥
आपे दाना आपे बीना
पूरै भागि समाए ॥५८ ॥ *(पन्ना ९४४)*

५८वीं पउड़ी में गुरु पातशाह से सिधों ने पुनः प्रश्न किया कि जिस शबद के माध्यम से संसार रूपी भवसागर से पार उतारा हो सकता है उस शबद का निवास कहां है? प्राणवायु का आधार क्या है? इन गहन प्रश्नों का सहज उत्तर गुरु पातशाह ने मन को साधने की प्रक्रिया को समझा कर ईश्वर-मिलाप का सुगम रहस्य समझाया है।

इस पउड़ी में गुरु पातशाह से प्रश्न किया गया है कि आप उस सुंदर शबद का निवास कहां मानते हो जिस शबद के माध्यम से संसार-सागर को पार किया जा सके? दस अंगुल तक बाहर आने वाली प्राणवायु का आप रहस्य समझाओ कि अंदर आधार क्या है? योगियों के चिन्तनानुसार श्वास जब बाहर निकालते हैं तब वायु दस अंगुल के फासले तक बाहर आती है और फिर श्वास को अन्दर तक खींचा जाता है। यह प्रक्रिया जीवन-पर्यन्त चलती रहती है। प्रश्न यह उठाया गया है कि यह प्राणवायु किसके सहारे अंदर जाती है और फिर बाहर आती है। साथ ही जो जीवात्मा शरीर के अंदर बोलती है, खेलती है, वह कैसे स्थिर बनी रहे। प्रभु की कोई अलग पहचान नहीं है, कोई चक्र-चिन्ह प्रतीक रूप में नहीं है, जिससे उसे पहचाना जा सके। गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे मालिक! सच्चे (सत्यस्वरूप) प्रभु की बात सुनकर मनुष्य अपने मन को कैसे समझा सकता है?

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर सहज एवं सुन्दर शैली में देते हुए गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति गुरमुख बन कर गुरु के हुक्म अनुसार चलता है, गुरु-शबद की बदौलत उसकी लिव प्रभु में जुड़ जाती है, ऐसे व्यक्ति को प्रभु की दया-दृष्टि से प्रभु-मिलाप नसीब हो जाता है। ईश्वर सर्वज्ञाता अर्थात् सब कुछ जानने वाला, पहचानने वाला है। अत्यधिक भाग्यशाली गुरमुख-जन ही प्रभु में टिका रहता है अर्थात् बहुत ही ऊंचे भाग्य वाले को ही प्रभु-मिलाप नसीब होता है।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

ईश्वर सर्वव्यापी है। उससे किसी प्रकार का कोई पर्दा नहीं हो सकता। वह सबके दिल की जानता है और सबकी नियत को भी पहचानता है। कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'चौपई साहिब' में पावन फरमान करते हैं :

घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥
चीटी ते कुंचर असथूला ॥
सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ॥

वह घट-घट की जानने वाला है, अन्तर्यामी है। वह सूक्ष्म से स्थूल सभी जीवों पर दया करके प्रसन्न होता है। दयालु पिता परमेश्वर की रहमतों की वर्षा हर वक्त होती है। मनमुख जीव अपनी मनमुखता के कारण उसकी रहमतों से वंचित रह जाते हैं और गुरमुख-जन उसकी अपार रहमतों से हर पल अपनी झोली भर लेते हैं। सतिगुरु की कृपा-दृष्टि से गुरु के हुक्म में चल कर ही परम पिता परमेश्वर की रहमतों का पात्र बना जा सकता है।

वास्तव में जीव के कर्मों के अनुसार मानव-जीवन मिलता है और परमेश्वर की कृपा-दृष्टि से ही मोक्ष प्राप्त होता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

—करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥
(पन्ना २)

—सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं
जह देखा तह सोई ॥
पवन का वासा सुंन निवासा
अकल कला धर सोई ॥
नदरि करे सबदु घट महि वसै
विचहु भरमु गवाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी
नामो मंनि वसाए ॥
सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ
इत उत एको जाणै ॥
चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ
नानक सबदु पछाणै ॥५९ ॥ (पन्ना ९४४)

५८वीं पउड़ी में पूछे गए प्रश्नों का और विस्तार से उत्तर देते हुए गुरु पातशाह ५९वीं पउड़ी में पावन मार्गदर्शन करते हैं कि सुंदर शबद का निवास भी सर्वव्यापी है। परम सदृश्य प्रभु अपनी समस्त कलाओं सहित कण-कण में व्यापक है, लेकिन उसकी कला की बनावट किसी को नज़र नहीं आती। ईश्वर-कृपा से शबद हृदय-घर में बस जाता है और जीव के समस्त भ्रम विनिष्ट हो जाते हैं। शबद की पहचान ही तो ईश्वर की पहचान है।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि शबद की बदौलत संसार सागर से पार उतरा जा सकता है। शबद निरंतर सर्वव्यापी है अर्थात् सुन्दर शबद का निवास अन्दर-बाहर हर जगह बना हुआ है। जिधर भी हम देखते हैं उधर ही दिखाई पड़ता है। जैसे अफुर परमेश्वर का निवास सर्वत्र है वैसे ही शबद भी सर्वव्यापी है। जिस तरह पवन का वास है ठीक उसी प्रकार शून्य का भी निवास है अर्थात् वायु भी ईश्वर सदृश्य सर्वव्यापी है। पवन सदृश्य ईश्वर अपनी कलाओं सहित सर्वव्यापक है। परमेश्वर की अमिट कलाओं की बनावट (रूप-रेखा) किसी को नज़र नहीं आती। (यही तो निर्गुण निराकार का सगुण प्रसार है।) ईश्वर की कृपा-दृष्टि के फलस्वरूप शबद हृदय में आ बसता है। शबद के हृदय में बसने से समस्त वहम-भ्रम

अन्तर्मन से समूल नाश हो जाते हैं। (समस्त भ्रमों के मिटते ही) तन, मन, वाणी निर्मल हो जाते हैं और (अमृतमयी) नाम हृदय में आ निवास करता है। शबद-गुरु को यहां-वहां (यत्र-तत्र) एक रूप जान कर संसार रूपी भवसागर को पार किया जा सकता है। प्रभु का कोई भी वर्ण, चिन्ह, माया, छाया आदि नही हैं। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि शबद को पहचानना ही परमेश्वर की सच्ची पहचान है।

जिस मनुष्य पर पारब्रह्म परमेश्वर की दया-दृष्टि होती है उसके हृदय में शबद-गुरु का निवास हो जाता है। हृदय में शबद के बसने के कारण जीव का मन, तन, वाणी सब कुछ पवित्र हो जाता है। प्रभु-नाम का निरन्तर लहराव हृदय-घर में हो जाता है। शबद को बदौलत भवसागर से पारउतारा मुमकिन है। जो जीव शबद के साथ घनिष्ठता बना लेता है, उस पर न तो माया का प्रभाव रहता है और न ही कोई भ्रम, कर्मकाण्ड, शंका आदि उसे अपने जीवन-मार्ग से भटका सकते हैं। वह अपनी अलग पहचान बनाने के उद्यम में नहीं लगा रहता अपितु स्वयं को ईश्वर में ही लीन कर लेता है। पावन वाणी का सन्देश है और जीव को अपना मूल पहचानने की सीख दी गई है कि हे मन! तेरा मूल स्वरूप ज्योतिमय (प्रकाश स्वरूप) है! तू अपने स्वरूप को पहचान! हे मन! परमात्मा सदा तेरे साथ है। तू गुरु-उपदेश (शबद-गुरु की शिक्षा) के अनुसार आनन्दित बना रह। जब तू अपने मूल स्वरूप को पहचान जाएगा तभी तू अपने मालिक को जान पाएगा और जन्म-मृत्यु के रहस्य को भी समझ जायेगा :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥
(पन्ना ४४१)

यह वही पावन शबद है जिसके गायन, श्रवण एवं मनन से अर्थात् जिसे हृदय में बसाने से समस्त दुख संताप दूर हो जाते हैं और हृदय घर में सदा आनंद बना रहता है।

त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥
गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै
चीनै अलख अपारो ॥
त्रै गुण मेटै सबदु वसाए
ता मनि चूकै अहंकारो ॥
अंतरि बाहरि एको जाणै
ता हरि नामि लगै पिआरो ॥
सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै
जा आपे अलखु लखाए ॥
नानक तिहु ते ऊपरि साचा
सतिगुर सबदि समाए ॥६०॥ *(पन्ना ९४४)*

६०वीं पउड़ी में भी गुरु पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने गुरु-शबद की महत्ता दर्शायी है। गुरु पातशाह ने स्पष्ट किया है कि गुरु-शबद की बरकत से गुरमुख-जन गुरु-शबद की कमाई करते हुए मन के अहंकार का समूल नाश कर लेते हैं।

अन्दर-बाहर आते-जाते श्वासों की माला बना कर जब प्रभु का सिमरन होता है तब प्रभु-नाम में लिव जुड़ जाती है। तब यह रहस्य खुल जाता है कि तीनों नाड़ियों—इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना की साधना

से बहुत ऊंचा है वो परमात्मा, जिसमें शबद की साधना से लीन हुआ जा सकता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे योगी! दस अंगुल बाहर आने वाले श्वासों के माध्यम से परमेश्वर का नाम जपना और सत्य बोलना ही वास्तव में प्राणों का आधार है। इन प्राणों की खुराक सच्चा परमेश्वर है, इसलिए श्वास-ग्रास परमेश्वर के सच्चे नाम का जाप करना चाहिए। गुरमुख-जन तत्व का मंथन करते हैं और फलस्वरूप अलख प्रभु को पहचान लेते हैं अर्थात् परमात्मा, जो इन आंखों द्वारा दिखाई नहीं देता और न ही जिसका कोई पारावार है, उसे शबद रूपी ज्ञान-चक्षुओं से पहचाना जा सकता है। प्रभु को शबद द्वारा पाया भी जा सकता है। त्रिगुणी माया के प्रभाव को मिटा कर जब हृदय-घर में नाम का निवास हो जाता है, जब कोई मनुष्य (गुरु-कृपा से) अन्दर-बाहर संसार में एक मालिक प्रभु को ही देखता है तो उसका प्रभु के साथ सच्चा प्यार हो जाता है। जब अलख प्रभु किसी को अपना अदृश्य स्वरूप दिखाता है तो जीव उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है जो इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियों के श्वास-अभ्यास अथवा कठिन साधना से भी प्राप्त नहीं होता। गुरु पातशाह पावन संदेश देते हुए समझाते हैं कि इन तीनों नाड़ियों की साधना से बहुत ऊंचा है सच्चा प्रभु, जिसमें शबद गुरु की बरकत से लीन हुआ जा सकता है।

६०वीं पउड़ी में गुरु पातशाह ने योगियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर की प्राप्ति हेतु कठिन साधनाओं की आवश्यकता नहीं है और न ही ईश्वर अपने शरीर को किसी तरह के कष्ट पहुंचाने से मिलता है। सहज प्राप्ति तो गुरु-शबद का अनुसरण करने, गुरु-शबद आशयानुसार जीवन बनाने से, प्रभु-सिमरन की बदौलत अहंकार का समूल नाश करने और प्रभु-नाम में लीन हो जाने से मुमकिन है। गुरबाणी में कहीं भी कठिन साधना पर बल नहीं दिया गया, अपितु सहज साधना प्रभु-सिमरन करते हुए गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर समस्त विकारों से निजात पाने की है। परमेश्वर की कृपा-दृष्टि जिस पर होती है उसे पूर्ण गुरु की प्राप्ति होती है और पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि से जीव गुरमति का धारक होकर अपने जीवन-मनोरथ में सफल हो जाता है। श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

हरि हरि गुण गोविंद जपाहा॥
मनु तनु जीति सबदु लै लाहा॥
गुरमति पंच दूत वसि आवहि
मनि तनि हरि ओमाहा राम॥ (पन्ना ६९९)

गुरबाणी में दीन दयालु प्रभु के चरणों में यही अरदास की गई है कि हे प्रभु जी! अपने सेवक पर कृपा करो और नाम-सिमरन के प्रति उत्साह प्रदान करो :

दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु
नानक नामु ओमाहा राम॥ (पन्ना ६९९)

खबरनामा

खन्ना थाने में अमृतधारी सिक्खों पर अमानवीय अत्याचार करने वाले थानेदार को शीघ्र मिले सज़ा : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : १२ अगस्त : बीते अप्रैल महीने में खन्ना के पुलिस थाने में थानेदार व अन्य पुलिस कर्मचारियों की तरफ से अमृतधारी गुरसिक्ख स. जगपाल सिंघ, उसके पुत्र तथा एक अन्य व्यक्ति पर नंगा कर किये गए अमानवीय अत्याचार के ४ महीने बीतने के बाद भी संबंधित थानेदार पर कोई कार्यवाही न होना निंदनीय है। यह बात कहते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने पंजाब के मुख्य मंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंघ से माँग की कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के दोषी थानेदार स. बलजिंदर सिंघ को तुरंत गिरफ्तार कर सख़्त कार्यवाही अमल में लाई जाये। भाई लौंगोवाल ने कहा कि पुलिस को यह बिलकुल अधिकार नहीं है कि वह पुलिस थाने में ऐसी अनैतिक कार्यवाही करे। किसी भी मामले में गिरफ्तार किये गए लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार करना गलत है। ऐसा करने वाले खन्ना थाने के तत्कालीन एस. एच. ओ. को गिरफ्तार किया जाये। उन्होंने कहा कि जब यह घटना घटी तब उन्होंने पंजाब के मुख्य मंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंघ को सख़्त कानूनी कार्यवाही करने के लिए पत्र लिखा था, जिसके जवाब में मुख्य मंत्री ने भरोसा दिलाया था कि दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही अवश्य होगी और इस संबंध में उन्होंने पंजाब के डी. जी. पी. से कह दिया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि हैरानी की बात है कि ४ महीने बीतने के बाद भी कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई। इस मामले में एस. आई. टी. की रिपोर्ट के आधार पर दर्ज किये गए केस में भी एक महीने से अधिक समय बीत जाने के बावजूद एस. एच. ओ. को गिरफ़्तार नहीं किया गया और न ही सख़्त सज़ा के लिए कोई कार्यवाही की गई। भाई लौंगोवाल ने कहा कि यह सरासर गलत है, जिस पर मुख्य मंत्री को गंभीर नोटिस लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह मामला सिक्खों की धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़ा हुआ है, क्योंकि पीड़ित व्यक्ति अमृतधारी गुरसिक्ख हैं। उन पर अत्याचार करते समय जहां उनको नंगा किया गया, वही उनके ककारों की भी तौहीन की गई। भाई लौंगोवाल ने पंजाब के मुख्य मंत्री से माँग की कि इस मामले में दोषी थानेदार सहित सभी पुलिस कर्मियों को शीघ्र गिरफ़्तार कर सख़्त सज़ा दिलाने के लिए ईमानदाराना छवि दिखलाई जाये, नहीं तो इस मामले के प्रति सिक्ख जगत में आक्रोश की भावना और भी प्रबल होगी।

भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा की माँ माता सुरजीत कौर के निधन पर भाई लौंगोवाल ने किया दुख का इज़हार

श्री अमृतसर : २७ अगस्त : सिक्ख संघर्ष के योद्धा शहीद भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा की आदरणीय माँ माता सुरजीत कौर के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने गहरा दुख प्रकट किया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि माता जी का चले जाना दुखदायी है। माता जी का पंथक क्षेत्र में बड़ा सम्मान था उनके पुत्र भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा ने सिक्खी की चढ़दी कला के लिए महान कुर्बानी दी है। उन्होंने अकाल पुरख के चरणों में माता जी की आत्मिक शान्ति के लिए अरदास की।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. सज्जण सिंघ बज्जूमान का निधन, भाई लौंगोवाल की तरफ से शोक व्यक्त

श्री अमृतसर : १ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. सज्जण सिंघ बज्जूमान के निधन पर गहरे दुख का इज़हार किया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि स. सज्जण सिंघ बज्जूमान सुलझे हुए धार्मिक नेता थे, जिन्होंने सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध में बड़ी सहयोगी भूमिका निभाई। वे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य भी रह चुके हैं। भाई लौंगोवाल ने कहा कि स. बज्जूमान के निधन से उनके परिवार के अलावा पंथक क्षेत्र में भी बड़ी क्षति हुई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने स. बज्जूमान के पारिवारिक सदस्यों के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए बिछड़ी रूह की आत्मिक शान्ति के लिए अरदास की।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़श सिंघ ख़ालसा, महासचिव स. हरजिंदर सिंघ (धामी) और कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, अपर सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. परमजीत सिंघ सरोआ, स. प्रताप सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रवक्ता स. कुलविंदर सिंघ रमदास ने भी स. सज्जण सिंघ बज्जूमान के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

पाकिस्तान में गुरुद्वारों की इमारतों पर नाजायज कब्ज़े की भाई लौंगोवाल द्वारा की गई निंदा

श्री अमृतसर : १ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने पाकिस्तान में सिक्खों के गुरुद्वारा साहिबान के वजूद ख़त्म करने की कोशिश की सख़्त शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में ऐतिहासिक गुरुद्वारों को पुलिस थाना और कब्र बनाने की खबरों ने सिक्ख संगत में भारी आक्रोश पैदा किया है। उन्होंने मांग की कि पाकिस्तान सरकार सिक्खों के गुरुद्वारों की इमारतों की सुरक्षा और संभाल धार्मिक नज़रिए से करे। उन्होंने भारत सरकार से भी अपील की कि वह पाकिस्तान में गुरुद्वारों पर किये जा रहे नाजायज कब्जे का मामला पाकिस्तान सरकार के सामने रखे। भाई लौंगोवाल ने कहा कि १९४७ ई. के देश-विभाजन के बाद सिक्खों के सैकड़ों गुरुद्वारे पाकिस्तान में रह गए हैं। परंतु ऐसा नहीं होना चाहिए कि ऐतिहासिक गुरुद्वारों की प्राचीन इमारतों के वजूद को ही ख़त्म कर दिया जाये। उन्होंने कहा कि सिक्खों की धार्मिक भावनाओं के मद्देनज़र इन इमारतों की संभाल और सुरक्षा करना पाकिस्तान सरकार का फ़र्ज़ है। जो लोग गुरुद्वारा साहिबान की इमारतों पर कब्ज़े कर रहे हैं, उनके विरुद्ध सख़्त कार्यवाही हो।

वर्णनीय है कि पंजाबी के एक अख़बार में छपी ख़बर के अनुसार पाकिस्तान में साहीवाल शहर की गाल्हा मंडी में मौजूद गुरुद्वारा श्री गुरु सिंघ सभा की इमारत को पुलिस थाना सिटी में तबदील कर दिया गया है। गुरुद्वारा साहिब के दीवान हाल आदि को कैदियों के लिए हिरासत वाली कोठरियों में तबदील करने के अलावा प्रकाश-स्थान को मुख्य अधिकारी के कार्यालय के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। इसी तरह छठे पातशाह से संबंधित एक अन्य गुरुद्वारा किल्ला साहिब की इमारत में भी सिक्ख मान्यताओं के विरुद्ध एक कब्र बना दी गई है। भाई लालो जी से संबंधित एक गुरुद्वारा साहिब पर भी एक परिवार की तरफ से कब्ज़े का ज़िक्र है, जो वहां पशुओं को बाँध रहा है।

जम्मू-कश्मीर भाषा बिल में से पंजाबी भाषा को नज़रअंदाज करना सिक्खों के साथ धक्का: भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : ३ सितंबर : जम्मू-कश्मीर भाषा बिल में से पंजाबी भाषा को बाहर रखने का सख़्त नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने भारत सरकार से अपील की कि वह इस संबंध में पुनर्विचार करे। उन्होंने इस मामले पर पंजाब से चुने गए संसद सदस्यों से भी अपील की कि वे संसद में इस बिल के विरुद्ध आवाज़ उठाएं और पंजाबी भाषा को इसमें शामिल करवाने के लिए यत्न करें। भाई लौंगोवाल ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पहले पंजाबी भाषा को उपयुक्त स्थान हासिल था। पंजाबी भाषा को जम्मू-कश्मीर के संविधान में भी मान्यता

मिली हुई थी। मौजूदा बिल में से पंजाबी भाषा को छोड़ कर उर्दू, कश्मीरी, डोगरी, हिंदी और अंग्रेज़ी को स्वीकार करना जायज नहीं है। उन्होंने कहा कि पूरे जम्मू-कश्मीर में जो लाखों लोग पंजाबी भाषा बोलते हैं, जम्मू-कश्मीर भाषा बिल के मौजूदा स्वरूप के कारण उनके मन को ठेस पहुँची है। उन्होंने पंजाब के संसद सदस्यों को इस मामले पर गंभीर रुख इख्तियार करने के लिए कहा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पहले ही सिक्ख अल्पसंख्यक वर्ग वाली सुविधाओं से वंचित हैं। उनकी निरंतर माँग रही है कि उन्हें भी अल्पसंख्यक वर्ग वाली सभी सरकारी सुविधाएं मिलनी चाहिए। अब जम्मू-कश्मीर भाषा बिल में से पंजाबी भाषा को बाहर कर अल्पसंख्यक सिक्खों के साथ एक बार फिर धक्का किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार को ऐसा नहीं करना चाहिए और जम्मू-कश्मीर के सिक्खों की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए।

श्री दरबार साहिब के लिए विदेश से चंदा भेजने की अनुमति देने का भाई लौंगोवाल ने किया स्वागत

श्री अमृतसर : १० सितंबर : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के लंगर तथा अन्य सेवा-कार्यों के लिए विदेश की संगत को चंदा भेजने की भारत सरकार द्वारा दी गई अनुमति का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि अब विदेश से भी संगत श्रद्धानुसार चंदा भेज सकेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में पहुँचे भाई लौंगोवाल ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से बीते समय से इस संबंध में कार्यवाही की जा रही थी, जिसके चलते भारत सरकार के गृह विभाग की तरफ से एफ. सी. आर. ए. (फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट) के अंतर्गत रजिस्ट्रेशन की गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री श्री अमित शाह और केंद्रीय मंत्री बीबा हरसिमरत कौर बादल का धन्यवाद करते हुए कहा कि इससे विदेश की संगत की काफी समय से चली आ रही माँग पूरी हुई है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के लिए चंदा भेंट करने वाली विदेश की संगत के लिए बैंक खाते से संबंधित जानकारी वेबसाईट पर उपलब्ध होगी, जिसके अनुसार चंदा भेजा जा सकता है। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य भाई मनजीत सिंघ, सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, अपर सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रवक्ता स. कुलविंदर सिंघ रमदास, उप सचिव स. सकत्तर सिंघ, स. सिमरजीत सिंघ (कंग) आदि अपस्थित थे।

सरकार श्री करतारपुर साहिब का रास्ता जल्द खोले : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : १० सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने भारत सरकार से श्री करतारपुर साहिब का रास्ता फिर से खोलने की माँग की है। उन्होंने कहा कि चाहे यह रास्ता कोरोना महामारी के बने हालातों के कारण बंद हुआ था, परंतु अब जब सरकार की तरफ से सावधानियों के तहत काफ़ी रियायत दी जा रही है, तो श्री करतारपुर साहिब का रास्ता भी संगत के लिए खोल देना चाहिए। उन्होंने कहा कि संगत चाहती है कि श्री गुरु नानक देव जी के पवित्र स्थान के रास्ते को फिर खोला जाये, ताकि वे अपनी श्रद्धा प्रकट कर सकें। भाई लौंगोवाल ने कहा कि इस संबंध में पाकिस्तान सरकार ने पहले ही एलान किया हुआ है और भारत सरकार को भी इस बारे में जल्द फ़ैसला लेना चाहिए।

हजूरी रागी भाई हरनाम सिंघ के निधन पर भाई लौंगोवाल द्वारा दुख का इज़हार

श्री अमृतसर : १६ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी भाई हरनाम सिंघ श्रीनगर वालों के निधन पर गहरे दुख का इज़हार किया है। उन्होंने कहा कि भाई साहिब ने गुरु-प्रदत्त कीर्तन की सेवा द्वारा देश-विदेश की संगत को गुरबाणी के साथ जोड़ा और गुरसिक्खी जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उनका अकाल प्रस्थान कर जाना सिक्ख पंथ के लिए बहुत बड़ी हानि है। गुरु-घर के कीरतनिए सिंघों का पंथ में अहम स्थान है और भाई हरनाम सिंघ के निधन से सिक्ख संगत में शोक की लहर है। भाई लौंगोवाल ने भाई हरनाम सिंघ श्रीनगर वालों के परिवार के साथ सहानुभूति जताते हुए अकाल पुरख के समक्ष अरदास की कि वे बिछड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें। इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरचरण सिंघ ग्रेवाल, महासचिव स. हरजिंदर सिंघ (धामी), कार्यकारिणी के सदस्य और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अन्य कई सदस्यों ने भी भाई हरनाम सिंघ के निधन को दुखमयी कहा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, अपर सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रवक्ता स. कुलविंदर सिंघ रमदास और श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. मुखतार सिंघ सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी हजूरी रागी भाई हरनाम सिंघ के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनके परिवार के साथ सहानुभूति का इज़हार प्रकट किया।